THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_178955

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H08 K29M Accession No. G.H. 2649

Author केकर, हेलन

Title मुक्त द्वार 1953.

This book should be returned on or before the date last marked below.

मुक्त द्वार

(The Open Door – by Helen Keller)

मूल लेखिका

हेलेन केलर

अनुवादक

भवानीप्रसाद मिश्र

पर्ल पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड, बंबई

मूल्य : ५० नये पैसे

इस पुस्तक में संगृहीत रचनाओं का चयन कुछ तो सेन्चरी कम्पनी द्वारा प्रकाशित '' दि वर्ल्ड आइ लिव इन ', कुछ ' माइ की आफ लाइफ ' (कापीराइट १९२६, १९५४ हेलेन केलर) से किया गया है। इनका पुनर्मुद्रण प्रकाशक, थामस वाय. क्रोवेल कम्पनी न्यूयार्क, की अनुमति से हुआ। कुछ रचनाएँ लेस्ली फुलनवाइडर इन्कारपोरेशन-द्वारा प्रकाशित ' वी बीरीण्ड ' से ली गयी हैं और शेष डबलडे एंड कम्पनी, इन्कारपोरेशन-द्वारा प्रकाशित इन पुस्तकों से—' दि स्टोरी आफ माइ लाइफ ' ' आउट आफ द डार्क ' ' माइ रिलिजियन ' ' मिडस्ट्रीम ' ' हेलेन केलर्स जर्नल ' ' लेट अस हैव फेथ '।

कापीराइट © १९०२, १९०३, १९०५, १९२६, १९२९, १९३८, १९४०, १९५४, १९५७—हेलेन केलर

कापीराइट १९२९—लेस्ली फुलनवाइडर इन्कारपोरेशन

कापीराइट १९२७—डबलडे एंड कम्पनी, इन्कारपोरेशन

कापीराइट १९१२—फिलिप्स पब्लिशिंग कम्पनी

कापीराइट १९०६—दि कर्टिस पब्लिशिंग कम्पनी

कापीराइट १९०५—पेरी मेसन कम्पनी

कापीराइट १९०४, १९०८—दि सेन्चरी कम्पनी

मूल ग्रन्थ का प्रथम हिन्दी अनुवाद

पुनर्मुद्रण के समस्त अधिकार प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

प्रथम संस्करण १९५९

मुद्रक : बा. ग. ढवळे, कर्नाटक मुद्रणालय, चिराबाजार, बम्बई २
प्रकाशक : जी. एल. मीरचंदानी, पर्ल पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड, १२, वाटरलू मैन्शन्स (रीगल सिनेमा के सामने) महात्मा गांधी रोड, बम्बई १

एन सलीवान मेसी को उस स्नेह के साथ समर्पित
जो जानता है कि मेरे जीवन ने आनन्द का अनुभव
एन के कारण ही किया है ।

प्रस्तावना

सत्तर साल पहले एक दृढ़निश्चयी सुयोग्य शिक्षिका ने सात साल की एक अंधी, बहरी व मूक बलिका को सोचने-समझने-लायक बनाने का कठिन व्रत लिया। अपने हृदय की समस्त वेदना, लगन व प्यार उसने इसमें उँडेल दिया। उस समय उस शिक्षिका की आयु केवल इक्कीस वर्ष की थी; लेकिन दिन-रात के अथक व कठोर परिश्रम से वह उस अंधी-अबोध बालिका की सुप्त शक्तियों को जाग्रत कर सकी और तब से पचास साल निरन्तर उसके साथ रह कर उसने उसे विश्व भर में लोकमान्य बना दिया। एन सलीवान उस विलक्षण शिक्षिका का नाम है और वह बालिका थी हेलेन केलर।

हेलेन केलर को आज सारा संसार जानता है; लेकिन केवल इसलिए नहीं कि वह अंधी और बहरी होते हुए भी लिखना-पढ़ना जानती है। अंधे और बहरे तो दुनिया में अनेक हुए हैं और आगे भी होंगे—लिखना-पढ़ना भी उनमें से कई सीख सकेंगे। हेलेन केलर की विश्व-विख्यात कीर्ति का कारण तो दरअसल यह है कि देखते-सुनने की शक्तियों के न रहते हुए भी जीवन को उसने जिस गहराई से देखा-समझा है, वह वस्तुतः आश्चर्यजनक है। उसकी सूझ-बुझ को आज दुनिया मानती है और अपने विचारों को जिस स्पष्टता के साथ उसने व्यक्त किया है, वह तो लेखकों के लिए भी स्पृहणीय है।

हेलन केलर इस युग का एक महान आश्चर्य, एक चमत्कार मानी जाती है और अपने मानवीय गुणों तथा प्रशिक्षण के प्रति प्रेम से भी प्रख्यात है। वह एक विचारक और लेखिका भी है। उसकी अनेक पुस्तकों में से ली गयी इन रचनाओं के पाठकों को यह भली प्रकार ज्ञात होगा।

केथेरिन कोर्नेल

सुख का एक द्वार बंद होने पर, दूसरा खुल जाता है; लेकिन कई बार हम बंद दरवाज़े की तरफ़ इतनी देर तक ताकते रहते हैं कि जो द्वार हमारे लिए खोल दिया गया है, उसे देख नहीं पाते ।

पाँच

सचमुच ही मैंने अंधकार के अंतरतम को देखा है, किंतु उसके सुन्न कर देनेवाले प्रभाव को अपने पर हावी नहीं होने दिया। मैं मन से उस समुदाय के साथ हूँ, प्रभात जिनके पाँवों में है। आदमी के मन में आने वाले काले उदास क्षण मेरे पथ में पतझड़ के पत्तों की तरह उड़-उड़ कर आयें—मुझे इसकी चिंता नहीं है। मेरे पहले इसी पथ से दूसरे भी गुज़रे हैं और मैं जानती हूँ कि रेतीले मरुस्थलों के बीच से जाने वाला रास्ता भी उसी तरह प्रभु के पास ले जाता है, जिस तरह हरे-भरे खेतों और बग़ीचों से होकर जाने वाला मार्ग! मेरा भी अहंकार चूर-चूर हुआ है; सृष्टि के विराट् के बीच मुझे अपनी लघुता का भान कराया गया है। मैं जितना अर्जन करती हूँ उतने ही अपने अज्ञान का मुझे ज्ञान होता है; जितना अधिक अपने इंद्रिय-अनुभवों को समझती हूँ, उतना ही अधिक मुझे दर्शन होता है उनकी त्रुटियों का, और जीवन का आधार बनने के लिए उनकी अपूर्णताओं का। कई बार आशावादी और निराशावादी तर्क ऐसे तौल कर मेरे सामने रखे जाते हैं कि केवल आत्मा की सारी ताक़त लगाकर ही मैं जीवन के व्यावहारिक और जीवित दर्शन का छोर पकड़े रह पाती हूँ। मैं अपनी आत्मशक्ति को काम में लाती हूँ, ज़िंदगी चुनती हूँ और उसके विरोधी तत्त्व—शून्यता—को अस्वीकार कर देती हूँ।

इस धरती के जीवन के अतिरिक्त
अगर कोई दूसरा जीवन न हो तो

मैं ऐसे कुछ लोगों को जानती हूँ जो हमारे मनों में अपनी गौरवपूर्ण याद के रूप में अमर हैं। अपने हर ऐसे प्रिय मित्र के साथ जो धरती में गड़ चुका है, मेरा एक भाग मिट्टी में लीन हो गया है; किंतु मेरे अस्तित्व के प्रति जो सुख, शक्ति और समझपूर्ण दृष्टि उन्होंने मुझे दी है, वह बदले हुए संसार में मुझे जीवन्त बनाये है।

साव

मेरा यह निश्चित विश्वास है कि भगवान ने हमें जीवन आनन्द के लिए दिया है; दु:ख के लिए नहीं। मुझे भरोसा है कि हर्ष के अतिरेक से मानवता कभी भी आलसी और लापरवाह नहीं बनेगी। प्रकृति की व्यवस्था में कष्ट, असफलता, विछोह और मृत्यु अवश्यम्भावी हैं; संभवत: विस्तृत विश्व-सभ्यता के भय से भरे हुए प्रयोगों और उलझनों के साथ ये अधिकाधिक दुर्लंघ्य बनते चले जायेंगे। प्रभु के प्रसाद प्रसन्नता को उसके जीवों के लिए सुलभ बनाने का कठिन और नाजुक कर्तव्य तब हमारा ही तो होगा। वास्तविक आनन्द के विषय में कई लोगों की गलत धारणा है। आनन्द स्वार्थ-सिद्धि से नहीं मिलता बल्कि किसी समुचित उद्देश्य के प्रति वफ़ादार रहने से मिलता है। स्वास्थ्य की तरह हर्ष का उपयोग भी साधन की तरह है; वह साध्य नहीं है। हर व्यक्ति के कुछ अबाध्य अधिकार हैं, जैसे जहाँ तक सम्भव है, अपने विचारों के अनुसार रहने-सहने का अधिकार, अपनी शक्तियों के विकास का अधिकार। यदि ये अधिकार अक्षुण्ण रहने दिये जायें तो इनसे सुख सम्भाव्य है। किंतु बिना आनन्द उपजाये आनन्द का उपभोग करने का या अपना बोझ दूसरे के कंधों पर डाल कर व्यक्तिगत इच्छा पूरी करने का अधिकार तो किसी को नहीं है।

सुरक्षा, निश्चिन्तता या बेफ़िक्री एक कल्पना है, अंधविश्वास है। इसका प्रकृति में अस्तित्व नहीं है और न कुछ मिलाकर मनु के बेटों को इसकी प्रतीति है। अपनी सृष्टि आदमी के हाथों में देकर खुद भगवान सुरक्षित नहीं है। जोखम से बचे-बचे फिरना और लापरवाही से एकदम खुले घूमने में अंततोगत्वा कोई बड़ा अंतर नहीं है। पहला दूसरे से अधिक निरापद नहीं है। धृष्ट और भयभीत समान रूप से पकड़े जाते हैं। त्राता तो केवल विश्वास है। जीवन अगर साहस से भरी यात्रा न हुआ, तो कुछ न हुआ। परिवर्तन को पीठ दिये बिना भाग्य से आँखें चार रख कर मुक्त आत्मा की तरह बरताव करने का नाम अपराजेय शक्ति है।

मेरी समझ में हमारी पीढ़ी में यह विचार पनपाकर कि हमें एक जमी-जमायी पक्की व्यवस्था में महफ़ूज़ जीवन जीना चाहिए, बड़ा नुकसान किया गया है; इस विचार ने कल्पना और आत्म-उपलब्धि की सीमाओं को घटाया है और सौभाग्य की दिशा में स्वतंत्रता से नाव खेकर ले जाने की योग्यता समाप्त कर दी है। अपनी धारणाओं के टूटने और अकल्पनीय घटनाओं के घटने से, वे लड़खड़ा रहे हैं। उन्होंने स्थिर व्यवस्था की अपेक्षा की थी; वह उन्हें न अपने आपमें, न विश्वमंडल में कहीं मिल रही है; समय रहते उन्हें यह खुद सीख कर दूसरों को सिखाना है कि परिवर्तन और शाश्वत भय-चक्र को ढाढ़स के साथ अंगीकार करके ही वे अन्यतम कर्तव्य का शिखर गाँठ सकते हैं।

सहिष्णुता शिक्षा का श्रेष्ठ सुफल है।
बहुत पहले के लोग अपने धर्म के लिए लड़ते-मरते थे। अपने भाइयों के धर्म और विश्वास-सम्बंधी अधिकारों को मान्य कर सकने का अपर शौर्य अपनाने में उन्हें युग लग गये। सहिष्णुता समाज का पहला सिद्धान्त है; वह मानव-चिंतन के उत्तम अंश को आत्मसात् करने वाली बुद्धि है। आदमी की अपनी असहिष्णुता ने जितने गौरवपूर्ण जीवनों और प्रेरणाओं का नाश किया है, बाढ़ और बिजली तथा प्रकृति के नाशकारी अन्य तत्त्वों ने उतने नगर या मंदिरों को नहीं मिटाया।

दैवी कृपा में बच्चे की तरह सरल विश्वास सारी समस्याओं को हल कर देता है – फिर चाहे समस्या धरती:से उपजी हो, चाहे समुद्र से लहरी हो। कठिनाइयाँ कदम-कदम पर हैं। वे जीवन-संगीत का साज़ हैं। वे व्यक्तिगत सनक और चरित्र के मिश्रण का फल हैं। उनका सामना करने का सबसे अचूक ढंग यह है कि हम अपने को अमर मानें और यह मानें कि हमारा एक सखा है जो उन्निद्र-चक्षु और अतंद्रित हमारी देखभाल करता है और अगर हम उसे दिखाने दें तो हमें राह दिखाता है। यदि यह विचार हम अपने अंतरात्मा में दृढ़ कर लें तो हम लगभग जो चाहें वही कर सकते हैं और तब हमें अपने चाहने की कोई सीमा बाँधने की जरूरत भी नहीं पड़ेगी। तब संसार की समस्त सुंदरता हम अपनी अंजलि में भर कर पी सकेंगे।

हर चोट को कोमल हाथों का स्पर्श मिलता है। पीड़ा में से धैर्य और मधुरता के नीलकमल उपजते हैं। उसमें से स्वप्न उभरते हैं वैसी पवित्र अग्नि-शिखा के, जिसने ईसा को छुआ था और उनके जीवन को प्राणमय बना दिया था, संध्या के तारे के साथ स्थिर होनेवाला संतोष दिया था। अगर उल्लंघन के लिए रेखाएँ न होतीं, जीतने के लिये बाधाएँ न होतीं, पार करने के लिए सीमाएँ न होतीं तो मानव-जीवन में पुरस्कार की तरह आनेवाले आनंद के अनुभव में कुछ-न-कुछ कमी आ जाती। अगर अंधेरी घाटियों को पार न करना पड़ता तो धूप से उज्ज्वल शिखर के क्षण उतने क्या, आधा भी मज़ा न देते।

इस बात में कोई संदेह नहीं कि हर व्यक्ति को रोज़ किसी न किसी विशिष्ट आनंद-लाभ का समय मिलना चाहिए — भले ही यह समय पाँच मिनिट का हो जिसमें वह कोई खूबसूरत फूल, बादल या तारे को खोज निकाले, अथवा कोई कविता याद करे या किसी के रूखे काम को सरस बनाये। भला उस भयानक परिश्रम की क्या फलश्रुति है जिसे करते हुए अनेक अपने आपको त्रस्त बना डालते हैं और सौंदर्य और प्रसन्नता से आँखें चार करने की घड़ियाँ, उबाने वाले सम्बंधों और कर्तव्यों के फेर में पड़ कर वे टालते ही चले जाते हैं। अगर वे इन सुंदर, ताज़ा और सदा सुलभ आनंदों के लिए दरवाज़े खुले नहीं रखते तो वे स्वर्ग के सुख-समीर के झोंकों को भीतर आने से रोके हुए हैं। इससे अस्तित्व पर धूल जम जाती है। धरती से आकाश अधिक चमकदार है इसका कोई अर्थ नहीं है, अगर हम धरती की खूबी नहीं देखते और उसका मजा नहीं लेते। धरती की सुंदरता को प्यार करके ही हम आकाश में उदय की प्रभा, अस्त की शोभा और तारों की चमक का आनंद उठाने का अधिकार पा सकते हैं।

मैं इस लोक में इतनी खुश हूँ कि आगे के बारे में बहुत नहीं सोच पाती; हाँ, इतना जरूर ध्यान में रहता है कि भगवान के उस सुंदर किसी-स्थान में मेरे मन के मीत मेरी प्रतीक्षा करते हुए खड़े हैं। वर्षों की दूरी के होते हुए भी वे मुझे अपने इतने पास लगते हैं कि अगर वे किसी क्षण मेरा हाथ पकड़ लें और मुझसे ऐसी प्यार-भरी बातें करें जो जाने के पहले किया करते थे, तो मुझे बिल्कुल आश्चर्य नहीं होगा।

लोगों ने संस्कार के बारे में पन्ने पर पन्ने रंग डाले हैं, किंतु फिर भी मुद्दे की बात बहुत कम की है। यह बड़े आश्चर्य की बात है। हमारे सभी आदर्शों को संपूर्ण बनाने के लिए कंठ खोल-खोल कर अभिमानपूर्वक आत्म-संस्कार को पर्याप्त घोषित किया गया है। किंतु यदि हम संसार-भर के उत्तम पुरुषों और स्त्रियों से पूछें तो वे सहमत नहीं होंगे। उनमें से अनेक विपुल ज्ञान का अर्जन कर सके हैं। वे बतायेंगे कि विज्ञान ने भले ही अधिकतर बुराइयों का इलाज ढूँढ़ लिया है; किंतु इनमें सबसे बड़े रोग, मनुष्य की उपेक्षा की औषधि अभी तक उसने नहीं ढूंढ़ी।

सूरज की किरनों का वैभव अनुभव करने के लिए अपने हाथ पसार दो। कोमल कुसुमों को कपोलों पर लगाओ और उनकी बनावट की शोभा, आकार की नाजुक परिवर्तनशीलता, ताज़गी और लचक को अंगुलियों से समझो। शून्य को बुहारते रहने वाले पवन के झोकों को चेहरे पर झेलो और आकाश के घूँट पियो, हवा की अनथक हलचल को विचारो। पानी के प्रपातों और अनंत शाखाओं पर के पातों से बह कर आनेवाले परस-पावन संवादी स्वरों की परतों पर परतें अपने प्राणों में पुँजीभूत करो। जब तक स्पर्श अनुभव करने की यह भावभरी शक्ति अपना काम करती है तब तक हमारी दुनिया छोटी कैसे हो सकती है? मैं भरोसे से कह सकती हूँ कि अगर कोई देवी मुझसे आकर देखने और छूने की शक्तियों में से एक चुनने को कहे तो मैं मानव के हाथों की ऊष्मा से भरे रूप के धन, हथेली पर आ लगने वाले चंचल और भरे-पूरे आकारों का प्यारा स्पर्श-सुख छोड़ने को तैयार नहीं हूँ।

बुराई क्या चीज़ है, सो मैं जानती हूँ। एक दो बार मैं उससे जूझी हूँ और मैंने अपने जीवन पर उसके ठिठुरा देनेवाले स्पर्श का अनुभव किया है। इसलिए जब मैं कहती हूँ कि बुराई की एक मानसिक कसरत के अतिरिक्त कोई वक़त नहीं है तो समझिये कि मैं अनुभव के बल पर ऐसा कह रही हूँ। इसीलिए कि मैं उसके सम्पर्क में आयी हूँ, मैं ज्यादा सही रूप से आशावादी हूँ। मैं विश्वासपूर्वक कह सकती हूँ कि बुराई में जो संघर्ष अनिवार्य हो जाता है, सो बड़े-से-बड़े वरदानों में से एक है। वह हमें मज़बूत, धैर्यशाली और मददगार क़िस्म का व्यक्ति बना देता है। परिस्थितियों की आत्मा तक वह हमें ले जाता है और सिखाता है कि भले ही संसार दुःख से भरा है, वह उसे जीतने की शक्तियों से भी भरा है। तो मेरा आशावाद बुराई के अनस्तित्व पर आधारित नहीं है, किन्तु इस प्रसन्नतापूर्ण विश्वास पर आधारित है कि अच्छाई उसकी अपेक्षा कहीं अधिक है और वह जीते, इसलिए अच्छाई के साथ मनःपूर्वक सहयोग करने के लिए मैं सदा तत्पर रहती हूँ। हर वस्तु और व्यक्ति के श्रेष्ठ को पहचानने की जो शक्ति मुझे प्रभु ने दी है मैं उसको विकसित करने का प्रयत्न करती हूँ और कोशिश करती हूँ वह श्रेष्ठ मेरे जीवन का अंश बने। संसार में सुख के बीज बोये गये हैं; किन्तु यदि मैं अपने प्रसन्नतापूर्ण विचारों को व्यावहारिक जीवन में न ढालूँ, अपने खेत को खुद न जोतूँ तो उस अच्छाई की फसलों को मैं कैसे काट सकती हूँ।

ऐसा हर व्यक्ति जो अपने मन की कोमलता से एक शब्द कह कर भी किसी की सहायता करता है, उत्साहित करने वाली मुस्कान फेंकता है या दूसरे की राह का ऊँचा-नीचापन थोड़ा-बहुत भी सँवार-सुधार देता है, वह जानता है कि इससे उसे जो खुशी होती है वह उसके व्यक्तित्व का एक ऐसा घनिष्ठ अंश बन जाती है कि वह खुद उसके सहारे जीने लगता है। जो बाधाएँ कभी अलंघ्य दिखती थीं, उनको लाँघ जाने के आनंद और सफलताओं की सीमा को अधिकाधिक बढ़ाने के आनंद से बढ़कर कौनसा आनंद है? जो लोग खुशी की तलाश में घूमते हैं वे अगर एक क्षण रुकें और सोचें तो वे यह समझ जायेंगे कि सचमुच खुशियों की संख्या, पाँव के नीचे के दूर्वादलों की तरह अनगिनत है; या कहिये कि सुबह के फूलों पर पड़ी हुई शुभ्र चमकदार ओस की बूंदों की तरह अनन्त है।

जब चेतना का सूर्य पहले-पहल मुझ पर चमका तब कैसा चमत्कार हुआ। मेरे आरंभिक जीवन की सारी सम्पदा जैसे चेतना की लहरों पर तिर कर फिर से लौट आयी और वह फिर से मुकुलित और मधुर होकर शैशव के रंगों में खिल उठी। अपने अस्तित्व की गहराइयों में मैं जैसे पुकार उठी –"जिन्दा रहना अच्छा है।" अपने दो काँपते हुए हाथ मैंने जीवन की ओर बढ़ा दिये और उसके बाद, फिर मूकता और निःशब्दता मेरे ऊपर छा गयी। जिस संसार में मेरी आँख खुली थी वह अब भी मेरे लिए रहस्यमय था, परन्तु अब उसमें आशा, प्रेम और प्रभु का वास था, और मेरे लिए इनके अतिरिक्त किसी चीज़ का कोई महत्व नहीं था। क्या यह सम्भव नहीं है कि स्वर्ग में प्रवेश करने का अनुभव मेरे इस अनुभव से मिलता-जुलता हो?

निराशा से अधीर होकर हम अपने आपसे पूछ बैठते हैं कि आखिर हमारी राह में इतनी भयंकर बाधाएँ क्यों? अकसर हम सोचने लगते हैं कि हमें इस तरह प्रतिकूल हवाओं और गरजते सागरों का सामना करने के लिए मजबूर क्यों होना पड़ता है, हमारी यात्रा सुख-चैन से क्यों नहीं होती? कारण यह है कि चरित्र का विकास शांति और सुविधा में नहीं होता। परीक्षाओं और वेदनाओं की अनुभूति से ही आत्मा सशक्त होती है, दृष्टि स्पष्ट होती है, आकांक्षाओं को प्रेरणा मिलती है, सफलता की प्राप्ति होती है। इतिहास ने जिन स्त्री-पुरुषों को मानवता की सेवा का अवसर देकर समादृत किया है, उनमें से अधिकांश को विपरीत परिस्थितियों का अनुभव हुआ है। उन्होंने कठिनाइयों और विरोधों के सामने घुटने टेकने से इनकार किया इसलिए वे विजयी हुए। इन अवरोधों ने उनकी सुप्त शक्तियों और इरादों को जगा दिया जिनके सहारे वे वहाँ से भी बहुत आगे पहुँच गये, जहाँ तक पहुँचने की कभी उनके मन में महत्वाकांक्षा-भर रही होगी।

आनेवाले अनेक वर्षों तक हमारे कदम विस्फोटित संसार के मलबे में डगमगाते रहेंगे। हमें शांत करने और प्रेरणा देने के लिए किसी ऐसे महान् उद्देश्य की आवश्यकता होगी जिसकी शक्ति किसी भी व्यक्ति की शक्ति से अधिक होगी और जो मानव-मात्र के लिए योग्य होगा। ऐसा स्वस्थ समाज जिसकी सम्पदा, हँसमुख बच्चे और प्रसन्न नरनारियाँ हों, जिसकी श्री-सुषमा, शांति और सृजनात्मक कार्यों से निर्मित हो, वह किसी के हुक्म से बना-बनाया हमें नहीं मिलेगा। वह तो हमें स्वयं अपने हाथों से गढ़ना पड़ेगा। हमारी नियति हमारी अपनी ज़िम्मेदारी है; बिना श्रद्धा के हम इस जिम्मेदारी को पूरी तरह नहीं निभा सकते। हमें यह खूब समझाया जा चुका है कि श्रद्धा बहुत अव्यावहारिक चीज़ है; और जिधर भी हवा बहे हमें अपनी नाव उधर ही मोड़ देनी चाहिए। परन्तु अब हमारे भीतर यह सत्य ज्वलंत है कि उदासीनता और समझौता सिवाय नाश के कुछ नहीं हैं।

जब मैं छोटी थी और कालेज में पढ़ती थी, तब मैंने अपने विचार को इस प्रकार लिखा था – "मुझे प्रभु में विश्वास है, मुझे मानव में विश्वास है, मुझे आत्मा की शक्ति में विश्वास है। मैं इसे एक पवित्र कर्तव्य मानती हूँ कि अपने में और दूसरों में उत्साह का संचार करूँ और ईश्वर की बनायी हुई इस दुनिया के ख़िलाफ़ कोई शब्द ज़बान से न निकलने दूँ; क्योंकि जिस ब्रह्मांड को प्रभु ने अच्छा बनाया है और हज़ारों लोगों ने जिसे अच्छा बनाये रखने के लिए अथक संघर्ष किया है, उसके ख़िलाफ़ शिकायत करने का किसी को अधिकार नहीं है।" यह लिखे बहुत वर्ष बीत गये, मगर अब भी मैं अपना मत बदलने का कोई कारण नहीं पाती। मैं समझती हूँ कि जिसे भी प्रभु, मानव और आत्मा में विश्वास है वह बुनियादी तौर पर आशावादी है। उस पर कैसी भी आपदा आये, उसे सदा मालूम रहता है कि ब्रह्मांड की प्रेरक शक्ति सत् है और उसे लगता है कि वह उससे और प्रभु के प्रेम से घिरा हुआ है।

मुझे कौनसा सांसारिक सुख प्राप्त है, जिसे भाग्य ने पति और मातृत्व के उल्लास तक से वंचित रखा है? लगता है मेरे एकाकीपन की शून्यता अगाध है। सौभाग्य से मेरे पास बहुत-सा काम है। यह काम करते समय मुझे यह विश्वास रहता है कि मेरी सारी साधें उस संसार में गौरवपूर्वक पूरी होंगी जिसमें न आँखों की ज्योति धुँधली पड़ती है न कानों की सुनने की शक्ति कम होती है।

हम अपनी पीड़ा के बारे में बढ़ा-चढ़ा कर सोचने लगते हैं तो जैसे निरर्थक पीड़ा मोल ले लेते हैं। आखिर हमीं इस तपन से क्यों बचे रहें, जो हमारे जैसे सभी नश्वर प्राणियों को निखार कर कंचन की तरह खरा बनाती है। अपने से ज़्यादा सौभाग्यशाली लोगों के भाग्य से अपने भाग्य की तुलना करने के बजाय हमें अपने-जैसे बहुसंख्यकों से अपनी तुलना करनी चाहिए। तब हमें लगेगा कि हमीं मजे में हैं।

जिस तरह स्वार्थ और शिकायत से मन रोगी और धुँधला हो जाता है, उसी तरह प्रेम और उसके उल्लास से दृष्टि तीखी हो जाती है। इससे हमें निरीक्षण की वह सूक्ष्मता प्राप्त हो जाती है, जिससे हमें मामूली और निष्प्रभ जान पड़नेवाली वस्तुओं में भी चमत्कारों के दर्शन होने लगते हैं। इससे प्रेरणा के स्रोत फिर से भर उठते हैं और हमारी भौतिकता से बढ़ी हुई प्रवृत्तियों के बीच में जीवन की उष्ण धारा बह चलती है।

स्वाधीनता, जिसमें हमारी आस्था नहीं है पहली गुलामी से ही अधिक मरी हुई है। अमरीकियों को अधिकांशतः अपने में इतनी आस्था नहीं रही कि अपनी सरकार के ढाँचे को ढालने में निर्णयात्मक भाग ले सकें। उन्होंने कदाचित् ही यह कष्ट उठाया होगा कि ऐसे उच्चकोटि के लोगों को चुने जो उनके हितों का ठीक-ठीक प्रतिनिधित्व कर सकें। उन्होंने अपनी जिम्मेदारी से मुँह चुराया है और आस्था जैसी महान् शक्ति को विकसित करने का भार उपदेशकों, स्वप्नद्रष्टाओं और अपंगों पर डाल दिया है; जब कि आवश्यक यह था कि समाज में उसका व्यापक रूप से प्रचार होता।

लोगों की पीड़ाओं और जिम्मेदारियों के बारे में जब मैंने जाना तो मुझे उस जीवन-शक्ति का भान हुआ जो अंधकार की शक्तियों पर विजय पाती रहती है। यह शक्ति चाहे कभी भी सम्पूर्णतः विजयिनी न हो सके, परन्तु यह निरंतर विजय प्राप्त करती रहती है। यही तथ्य कि हम अब भी सर्वनाश के शक्ति-समूहों से लड़े जा रहे हैं सिद्ध करता है कि कुल मिलाकर इस संघर्ष में मानवता ही विजयिनी रही है। प्रभु ने जो बड़ा काम उसे सौंपा था, वह उसके अनुरूप सिद्ध हुई है। बार-बार पराजित हो कर भी आगे बढ़ते रह कर, आत्मप्रताड़ित होकर भी आस्था अर्जित करके, निर्भीक और दृढ़संकल्पी मानव-मन यह रहस्यपूर्ण स्वर सुनता रहता है कि हिम्मत न हारो, भविष्य में तुम्हें उस स्वर्णलोक के दर्शन होंगे।

हर ओर से हमें धर्म की ओर लौट चलने की आवाज़ सुनाई देती है। इस आवाज़ में हमें ईमानदारी के आशाप्रद संकेत मिलते हैं; परन्तु क्या यह कुछ उलझी हुई बात नहीं जान पड़ती है कि हम धर्म की ओर लौट चलने की बात कहें जब कि धर्म का अर्थ ही श्रद्धा की ओर लौट चलना है? धर्म तो श्रद्धा का फल है। आस्थाहीन धर्म की मांग करना वैसा ही है जैसा बिना बीज के फूल की माँग करना। इस संसार में अनेक धर्मों ने आशा का संचार किया है; परन्तु उन सबके मूल में आस्था एक ही रही है, ठीक उसी तरह जैसे हर अच्छे काम के मूल में सद्भावना एक ही होती है। मुझे लगता है जैसे धर्म शायद मनुष्य की ईश्वर को न पाने की निराशा है, जब कि आस्था आशा है–वह ईश्वर-द्वारा मानव की खोज है।

रोज मैं अपने आँख-कान वाले मित्रों को अपनी शंकाहीन आस्था अर्पित करती हूँ। वे मुझे बताते हैं कि अकसर उनका इंद्रिय-ज्ञान उन्हें धोखा देकर भटका देता है। परन्तु उन्हीं की साक्षी पर मैं ऐसे अगणित अनमोल सत्य जुटा लेती हूँ जिनसे मैं अपनी एक दुनिया बनाती हूँ और मेरी आत्मा आकाश के सौंदर्य का दर्शन करने और चिड़ियों का गाना सुनने में सफल हो जाती है। मेरे चारों ओर निःशब्दता और अंधकार अवश्य है; पर मेरे अंतर में, मेरी आत्मा में संगीत और प्रकाश है और मेरे सारे विचारों में रंगों की तरंगें उठती हैं।

सृष्टि के हाथ में जो सबसे अच्छा, सबसे महान् और सबसे बड़ा काम है, वह है प्रकृति की सारी शक्तियों को मानव-मन के और सारी भौतिक शक्ति को आत्मा की शक्ति के अधीन करना। हाथ की इस महानतम विजय से हम अब भी बहुत दूर हैं। अभी इसकी शक्तियों को अनुशासित और संगठित होना शेष है। सबसे पहले सृष्टि के सभी अंगों का पुनरुद्धार होना आवश्यक है। बहुजन की भावना का आत्म-चेतनायुक्त और सविवेक संगठित हो जाना आवश्यक है जिससे सृष्टि का कोई भी अंग पीड़ाग्रस्त न रहे और कोई भी किसी को बंधन में न रख सके। तब हाथ अर्थात् मानव की संजीवन शक्ति जो सृष्टि की कार्यकारिणी शक्ति है, उस मंच पर निष्कंटक शासन करेगा जिससे वह अभी तक पराजित होता रहा है। तब सबके लिए प्रचुरता होगी और बलशालियों की भुजाओं के सामने दीनों के हाथ नहीं फैलेंगे। तब सृष्टि के हाथ उसे प्राप्त कर लेंगे जिसे अभी हम प्रतीक रूप में मानव जाति का विकास और पुनरुज्जीवन कहते हैं; परन्तु तब मानव में जो सृजनशील है वही महानतम होगा।

लोग कहते हैं कि ज़िन्दगी मेरे प्रति निर्दय रही है और कभी-कभी मैंने भी मन ही मन यह शिकायत की है कि मानव अनुभवों के अनेक सुखों से मुझे वंचित रखा गया है; परन्तु जब मैं सोचती हूँ कि मुझे कितने बड़े मित्रता के भंडार का वरदान मिला है तो मैं ज़िन्दगी के ख़िलाफ़ अपनी सारी शिकायतें लौटा लेती हूँ। जब तक मेरे मन में किन्हीं प्यारे मित्रों की याद बनी हुई है, तब तक मैं अपने जीवन को बुरा किस तरह मान सकती हूँ।

विश्वास! कुछ भी हो मेरा विश्वास नहीं डिगता। मैं उस शक्ति की कृपा को पहचानती हूँ जिसे हम सब सर्वोच्च मान कर पूजते हैं। चाहे उसे व्यवस्था, नियति, परमात्मा, प्रकृति या ईश्वर कुछ भी कहें। मुझे सूर्य में यही शक्ति जान पड़ती है, जो हर चीज़ को चमकाता और ज़िन्दगी को क़ायम रखता है। मैं इस अपरिमेय शक्ति से मित्रता कर लेती हूँ और तत्काल ही अपने को प्रसन्न, निडर और आसमान मुझ पर जो भी बरसाये, उसे झेलने के लिए तैयार पाती हूँ। यही मेरा आशा-धर्म है।

मैं निर्धनता और उसके पतनकारी प्रभावों की उतनी ही विरोधी हूँ जितना कोई दूसरा। परन्तु साथ ही हमारा अनुभव हमें सिखाता है कि अगर हम अपनी वर्तमान स्थिति में सफल नहीं हो सकते तो किसी अन्य स्थिति में भी नहीं हो सकेंगे। अगर हम कमल की तरह कीचड़ में भी पवित्र और दृढ़ नहीं रह सकते तो हम कहीं भी रहें, नैतिक दृष्टि से कमज़ोर ही साबित होंगे। अगर हम जहाँ है वहीं से सृष्टि की सहायता नहीं कर सकते, तो कहीं और होकर भी हम कुछ नहीं कर सकेंगे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि हम कैसी परिस्थितियों में हैं; बल्कि यह कि वे विचार कैसे है जिन पर हम रोज़ मनन करते हैं; वे आदर्श कैसे हैं जिनका हम अनुसरण करते हैं। एक शब्द में, हम व्यक्ति कैसे हैं? अरबी की यह कहावत सोलहों आने सच्ची है कि जहाँ तू अपने को पाता है वही तेरी दुनिया है।

प्रकृति के आश्चर्यों से भी अधिक आश्चर्यजनक हैं आत्मा की शक्तियाँ। किसी अन्यलोक के बारे में मूक विचार या रूढ़ बातें दुहराने के बजाय हम स्वयं ही कल्पना के पंख लगा कर अज्ञात के अछोर विस्तारों को निडर पार करके उस प्रफुल्लतापूर्ण, मानवीय तथापि दैवी आत्मीयता में क्यों नहीं प्रवेश कर लेते, जो कि स्वर्ग है?

मुझे अपना देश प्यारा है। यह कहना वैसा ही है जैसे मुझे अपना परिवार प्यारा है। जिस तरह मैंने यह नहीं चुना था कि मेरे माता-पिता कौन हों, इसी तरह यह भी नहीं चुना कि मेरा देश कौन हो। मगर में उसकी बेटी हूँ, वैसी ही जैसी मैं अपने दक्षिणवासी माता-पिता की बेटी हूँ। मैं जो कुछ भी हूँ, मेरे देश ने मुझे बनाया है। उसने उस आत्मा का पोपण किया है जिसके सहारे मेरी शिक्षा-दीक्षा हुई है। यूनान, रूमाँ, चीन, जर्मनी, ग्रेट-ब्रिटेन कहीं भी एक बहरे-अंधे बच्चे पर इतने कौशल और साधनों का व्यय नहीं किया गया जितना मुझ पर मेरे देश अमरीका में।

परन्तु अमरीका के प्रति मेरा प्रेम अंधा नहीं है। शायद मुझे उसकी भूलों का ज़्यादा ध्यान है; क्योंकि मैं उसे इतना अधिक प्यार करती हूँ। मैं अपनी निजी भूलों से भी अनजान नहीं हूँ। यह देख लेना तो आसान है कि पुराने तरीकों में अब अच्छाइयाँ नहीं रहीं और नये तरीकों की खोज करना आवश्यक है; परन्तु यह निश्चय कर चुकने के बाद भी इस बदलती हुई दुनिया में अपनी चाल को सधी हुई रखना आसान नहीं है।

जैसे-जैसे मेरे अनुभव व्यापक और गहन होते गये, मेरे बचपन की अनिश्चित काव्यात्मक भावनाएँ निश्चित विचारों का रूप ग्रहण करती गयीं। प्रकृति का ही संसार ऐसा था, जिसमें मेरी पहुँच थी; मैं उसमें अपने-आप को पाने लगी। मुझे उन दार्शनिकों की बात सही लगती है जो कहते हैं कि हम अपनी निजी भावनाओं और विचारों के अतिरिक्त कुछ नहीं जानते। तनिक युक्ति से तर्क करने पर यह हम पर प्रकट हो सकता है कि यह भौतिक जगत केवल एक आइने की तरह है जिसमें हमें बराबर अपने मानसिक बोध के प्रतिबिम्ब दिखाई देते रहते हैं। आत्मज्ञान ही हमारी चेतना की शर्त और सीमा है। शायद इसीलिए कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अपने अनुभव की छोटी परिधि के बाहर की बातें बहुत कम जानते हैं। वे अपने भीतर देखते हैं और उन्हें जब वहाँ कुछ नहीं मिलता तो वे यह निष्कर्ष निकाल लेते हैं कि बाहर कुछ नहीं है।

जब हम यह सोचते हैं कि हमारे रोज़ के छोटे-छोटे निर्णय नगण्य हैं, तब हम अपनी ही तुच्छता प्रदर्शित करते हैं। हर मामूली काम, सबक़ या मुद्रा को जीवन्त बनाने के लिए एक रूपक सांग करने और जोखिम उठाने की आवश्यकता होती है। क्षण-प्रतिक्षण के आचरण से ऐसा व्यवहार स्वाभाविक हो जाता है। हममें जो कुछ स्वस्थ होता है और प्रगती करता है वह इसी आचरण का सुन्दर सारतत्व होता है। रोज़ जितना हमसे अपेक्षित है उससे कुछ ज़्यादा हमें करना चाहिए। अगर हम किसी ऐसे काम पर प्रसन्नता से नित्य मेहनत करते हैं जिसे हम तब तक न करते जब तक कोल्हू के बैल की तरह उसे करने पर मजबूर ही न होते, तो हमारे व्यक्तित्वों को निपुणता प्राप्त होती है और कभी न कभी वे महान् परीक्षा के लिए सोल्लास तत्पर हो जाते हैं। रोज़ अपने को दृढ़ संकल्पों और सहज आत्माभिव्यक्ति का अभ्यास कराते रहना समुद्र में गोता लगाने की तरह है। तत्काल ही उसके फायदे भले दिखाई न दें, परन्तु इस प्रकार समुद्र के खारे पानी की भांति सद्गुण हमारे रेशे-रेशे में पेबस्त होकर हमारी आगामी विजय के लिए संचित होते रहते हैं।

एक बार एक कवि ने मुझसे कहा कि मै भाग्यवान् हूँ क्योंकि मैं नग्न और निर्मम यथार्थ को नहीं देख पाती और एक सुंदर स्वप्नलोक में निवास करती हूँ। यह सच है कि मैं एक सुंदर स्वप्नलोक में निवास करती हूँ; परन्तु वह स्वप्न यथार्थ और वर्तमान है। निर्मम नहीं मनोरम है। नग्न नहीं शत-शत वरदानों से सुसज्जित है। कवि के ख़याल से जो बुराई मेरी प्रत्याशाओं पर कठोर वज्रपात कर देती असल में आनन्द के सम्पूर्ण ज्ञान के लिए वही आवश्यक है। बुराई के संपर्क में आकर उसका फ़र्क़ समझ कर ही मैंने सत्य, प्रेम और अच्छाई की सुंदरता का अनुभव करना सीखा है।

जो यह नहीं जानता कि आनन्द जीवन की एक महत्वपूर्ण शक्ति है, वह जीवन के सार से वंचित रहता है। आनन्द एक आध्यात्मिक तत्व है जो इस नित्य परिवर्तनशील जगत् को एकता और महत्व के सूत्र में गूँथता है। सत् की विजय का विश्वास एक समूची जाति में नवजीवन का संचार कर देता है। व्युत्पन्न आशावाद से मनुष्य में सृजनात्मक उद्देश्य विकसित होता है और जो भय-भीतियाँ विचारों को जकड़े रहती हैं, टूट जाती हैं। निराशा या निष्क्रिय विमुखता से आत्मा कमज़ोर हो जाती है और समाज पतन के गर्त में चला जाता है, जब कि संकल्पित विमुखता एक शक्ति है। पहली चीज़ केवल पछतावा है, जब कि दूसरी एक प्राप्ति है; क्योंकि वह एक निष्ठा है, एक प्रेरक शक्ति है। आशावाद वज्र है जो नियति-धूमिल वातावरण के धुंध को विदीर्ण कर देता है।

जब मैं अकेली जीवन के बन्द किवाड़ों पर बैठी-बैठी प्रतीक्षा करती हूँ तो सच है कि कभी-कभी अकेलेपन का भाव मुझ पर छा जाता है। उस ओर रोशनी है, संगीत है और मधुर मैत्री भी। लेकिन मैं वहाँ प्रवेश नहीं कर सकती! भाग्य, मूक निर्दय भाग्य ने वह राह रोक दी है। भले ही मैं उसके उद्धत निर्णय का प्रतिवाद करूँ क्योंकि मेरा हृदय अब भी आवेगपूर्ण और अनुशासनहीन है लेकिन मेरे होंठों तक उठकर आये हुए कड़वे और निरर्थक शब्द बाहर नहीं फूटते। बिन बहे आँसुओं की तरह वे मेरे हृदय में ही वापस लौट जाते हैं। मेरी आत्मा पर मौन का बोझ भारी है। फिर आशा आती है और मुस्कराकर चुपके से कहती है, 'आत्म-विस्मृति में बड़ा आनंद है।' तभी तो मैं यत्न करती हूँ कि दूसरों के नेत्रों का प्रकाश मेरा सूरज, दूसरों के कानों का संगीत मेरी संगीत-रचना और दूसरों के होंठों पर थिरकनेवाली मुस्कान मेरी खुशी बन जाये।

हम संशय-संदेहों से भरे हैं तो इसमें निरुत्साहित होने की क्या बात है ! स्वस्थ प्रश्न श्रद्धा को गतिशील बनाये रखते हैं। सच तो यह है कि हम संदेह से प्रारंभ न करें तो हमारी श्रद्धा बद्धमूल नहीं हो पायेगी। हल्के-फुल्के ढंग से, बग़ैर सोचे-समझे विश्वास करने-वाला व्यक्ति कुछ बहुत विश्वास नहीं करता। जिसकी आस्था अडिग है वह उसका मूल्य अपने आँसू और रक्त से चुकाता है। वह संशय से गुज़रता हुआ सत्य तक पहुँचता है – ठीक उसी तरह, जैसे काँटों और कँटीली झाड़ियों से होकर सुथरी जगह तक पहुँचनेवाला कोई व्यक्ति।

एक बात मैं और नहीं भूलती कि एक पीढ़ी को प्रकाशित करके, दूसरी में बुझ जाने वाले विश्वासों की प्रवृत्ति कैसी होती है। उत्साह ठंडा पड़ जाने पर अलौकिक के साक्षात्कार का सहज भाव तथा आनन्द मिट जाता है, जीवन और आचरण-सम्बंधी विचार बिना किसी छानबीन के स्वीकार कर लिये जाते हैं। संप्रदायों, कर्मकांडों और आचार-विचार के नियमों में घिरकर वास्तविक धर्म लुप्त हो जाता है। शास्त्र का प्राणहीन भार प्राणघातक होता है और श्रद्धा अर्थात् पाषाण को सजीव बना कर पंख प्रदान करनेवाली रागिनी, बहरे पुराणपंथ के सामने आते ही विलीन हो जाती है। जीवनदायिनी शक्ति में स्फूर्ति लाने के लिए ज़रूरी है, विद्रोह। इस ज्वारभाटे से प्रत्यक्ष होता है कि इससे लहरनेवाली आस्था और स्वतंत्रता कितनी अजेय है। प्रत्येक युग में, आस्था ने मनुष्य में सृष्टि के वैभव का अन्वेषण करने की भावना जगायी है। वह उस शक्ति को प्रकट करती है जो मनुष्य के भीतर है और उससे परे भी है जो उसे नूतन लक्ष्यों की ओर प्रेरित करती है।

अपनी कमियाँ को पहचानो और स्वीकार करो। लेकिन वे तुम पर विजयी न हों। उनसे धैर्य, मिठास और अंतरदृष्टि की शिक्षा ग्रहण करो। सच्ची शिक्षा बुद्धि, सौंदर्य और अच्छाई का समन्वय होती है। इनमें सबसे बड़ी चीज़ है, अच्छाई। हमसे जो भी अच्छा बन पड़े, उसे करें। कह नहीं सकते कि उससे हमारे जीवन में या किसी और के जीवन में क्या चमत्कार उत्पन्न हो जाये!

भौतिक रूप में जन्म लेने की हद तक हम नितान्त असहाय और दूसरों पर निर्भर रहते हैं; पर आध्यात्मिक जन्म में हम सक्रिय, और एक प्रकार से स्रष्टा होते हैं। अस्तित्व में अपने जन्म पर हमारा कोई वश नहीं होता, क्योंकि अपने को कुछ भी बनाने से पहले हमारा आस्तित्व तो रहता ही है। इसके विपरीत आध्यात्मिक जीवन में हमारा जन्म हमारी इच्छा पर होता है। उसमें हमारा अत्यंत प्रत्यक्ष भाग रहता है; क्योंकि हमारी इच्छा के प्रतिकूल कोई भी वास्तविक कहलाने लायक आध्यात्मिक जीवन हम पर थोपा नहीं जा सकता।

यही अर्थ है प्रभु की उस वाणी का जिसके द्वारा वे हम सबको अपने निकट आने और जीवन को चुनने, और चुने हुए जीवन को चुरा ले जाने के लिए तत्पर आसुरी-शक्तियों से सचेत रहने का प्रेमपूर्ण निमंत्रण निरंतर दे रहे हैं। अपनी विचार-शक्तियों का प्रयोग करके, तथा अपने हृदय को सात्विक एवं स्नेहपूर्ण बनाये रखकर ही हम सचमुच सजीव हो पाते हैं। किन्तु बारम्बार-सृजन की यह सौंदर्यमयी प्रक्रिया महज़ देखने-भर से नहीं सधती, यह तो आत्मा की नीरव गहराइयों में अंकित होती है। प्रभु ने कहा है—हवा चलती है तो उसकी आवाज़ ज़रूर सुनाई देती है, लेकिन यह पता नहीं लग पाता कि वह आवाज़ कहाँ से आती और कहां को जाती है। जो भी चैतन्य से जन्मा है उसकी प्रकृति यही है।

दुखदायी स्वप्न से जागने पर किसी प्रियजन का मुस्काता हुआ मुख देखने से अधिक मधुर और क्या होगा! मुझे यह विश्वास करना प्रिय लगता है कि इस पृथ्वी से स्वर्ग में हमारा जागरण इसी प्रकार का होगा। मेरा अडिग विश्वास है कि प्रत्येक प्रिय मित्र जिसे मैंने खोया है इस संसार और आगामी प्रभात वाले सुखदायक संसार के बीच एक और कड़ी जोड़ देता है। उन मित्रों के हाथों का स्पर्श मुझे नहीं मिलता, या उनकी ममतामयी वाणी मुझे नहीं सुनायी देती, तो एक पल के लिए मेरी आत्मा व्यथा में डूब जाती है; पर आस्था का प्रकाश फिर भी मेरे आकाश में बना रहता है। मैं फिर से साहस संचित करती हूँ और खुश होती हूँ कि वे मुक्त हो गये। मैं समझ नहीं पाती कि मृत्यु से डरा क्यों जाय! इस संसार का जीवन मृत्यु से कहीं अधिक निर्दय है। जीवन अलग-अलग कर देता है, दूर हटा देता है जबकि मृत्यु – जो वस्तुतः शाश्वत जीवन है – मिलाती है। मुझे विश्वास है कि जब मेरी भौतिक आँखों के भीतर स्थित नेत्र आगामी संसार में खुलेंगे तभी वास्तव में मैं अपने मनोवांछित संसार में सजग भाव से निवास करूंगी। मेरी आँखों के धोखे में न आकर, मेरे सुस्थिर विचार समस्त भौतिक दृश्यों से अतीत किसी छटा तक पहुँचते हैं। मान लो कि यह संभावना लाखों संभावनाओं में से केवल एक हो, कि जो प्रियजन जा चुके हैं, वे जीवित हैं। तो भी मैं उसे एक-

मात्र संभावना मानूँगी और किसी प्रकार के संशय से उनकी आत्मा को दुखी बनाने की अपेक्षा ग़लती करने का ख़तरा झेलना पसंद करूंगी। देखूंगी कि बाद में क्या होता है! अमरत्व की एक संभावना तो है ही, इसलिए मैं यत्न करूंगी कि जो व्यक्ति विदा लेकर चला गया, उसके आनंद में कोई बाधा न पड़ने पाये। कभी-कभी मैं सोचती हूँ कि खुश रहने की जरूरत किसे ज़्यादा है? उसे जो यहाँ धरती पर अंधेरे में भटक रहा है, या उसे जो शायद ईश्वरीय प्रकाश में सचमुच ही आँखें खोलना शुरू कर रहा है? कितना अन्धकार है उस व्यक्ति के आगे जो इस धरती की छाया में घिरा हुआ एक अदृष्ट सूर्य का अनुमान मात्र लगा रहा है। लेकिन इस प्रयत्न का सचमुच ही बड़ा मूल्य है कि जिन लोगों ने इस संसार में अपने अंतिम क्षणों तक हमें प्यार किया है उनके साथ हम अपना आध्यात्मिक सम्पर्क बनाये रक्खें। निश्चय ही यह एक अत्यंत मधुर अनुभव है कि जब हम किसी उदात्त स्नेह अथवा विशुद्ध आनंद से अभिभूत होते हैं तो हम दिवंगतों को कितने स्निग्ध भाव से स्मरण करते हैं और उनके प्रति कितना प्रबल अनुराग अनुभव करते हैं! ऐसी श्रद्धा की जागरूकता में सदैव इतनी शक्ति होती है कि वह मरणशीलता का स्वरूप बदल दे, विपत्ति को विजय-संघर्ष में परिवर्तित कर दे, और जिन लोगों के आनंद का अंतिम आधार नष्ट हुआ प्रतीत होता है, उनके लिए उत्साह की शिखा प्रज्वलित कर दे। यदि हमें विश्वास

हो कि स्वर्ग हमसे परे नहीं, बल्कि हमीं में है, तो फिर 'परलोक' का अस्तित्व ही नहीं रहता। इससे तो हमें और भी, यह प्रेरणा मिलती है कि यहीं और अभी कर्म करें, प्यार करें, आशा के विपरीत भी आशा करें, और अपने चारों ओर छाये अंधकार को अपने भीतर बसनेवाले स्वर्ग की सुन्दर आभा से आलोकित करने का संकल्प करें।

'संकट' का नाम सुनकर थर्रा उठने की क्या बात है। कोई ज़रूरी नहीं कि वह दुखान्त परिणति ही हो। सम्भव है कि वह कम और अधिक प्रकाश में से एक हो, या फिर घिसे-पिटे मूल्यों और प्रगतिशील शुभ में से कोई एक – जिसे भी हम चुनना पसंद करें। निर्णय का अधिकार सदा मनुष्य का ही रहेगा। साधारण चुनाव महत्वपूर्ण होते हैं और सीधे-सादे शब्द निर्णयकारी। ग़ौर से देखें तो जब भी हम रोटी का टुकड़ा तोड़ते हैं, हमें हमेशा अनुभव होता है मानो मानवता अपने अंतिम क्षणों में याचना कर रही है। संसार में होनेवाली प्रत्येक मृत्यु मृत व्यक्ति के प्रति सहानुभूति अनुभव न करने और उसकी सहायता में असमर्थ होने के लिए हमें अपने-आप को कोसने का कारण प्रदान करती है। आनंद हमारे पास इतना नहीं है कि हम उसे सामान्यता के क्षुद्र स्तरों में लुटाते फिरें। हमें बहुत कुछ प्राप्त है जिसके जरिये हम हर रोज़ अच्छे बने रह सकते हैं। मुसीबतें तो बहुत ज़्यादा हैं और वे हमें बहुत अव्यवस्थित भी बनाती हैं; पर उनके कारण हमें अपनी आंतरिक सुरक्षा के प्रति केवल फ़र्ज़अदायगी या लापरवाही का भाव नहीं बरतना चाहिए।

अकसर पीड़ा से हृदय विह्वल हो जाने पर हम आध्यात्मिक दृष्टि से यों भटक जाते हैं मानो दुर्गम वन में पथ-भूले यात्री हों। हम भयभीत हो उठते हैं, दिशाज्ञान खो बैठते हैं और रास्ते की खोज करते-करते वृक्षों-चट्टानों से टकराते फिरते हैं। इस सारे समय एक राह मौजूद होती है, और वह है श्रद्धा की राह। कठिनाइयों के घटाटोप से हमें निकालकर यही राह जिसे हम खोजते थे उस मुक्त पथ तक पहुंचाती है।

जब मैं सोचती हूँ कि मनुष्य के हाथ ने क्या-क्या चमत्कार किये हैं, तो मुझे खुशी होती है और लगता है कि मैं कुछ ऊँची उठ गयी हूँ। मनुष्य का हाथ मानो ईश्वरीय हाथ का प्रतिरूप और माध्यम है। हम लोग उसी हाथ की कृति, उसी की कीर्ति हैं और मानव-जाति के जन्मकाल से लेकर युग-युग तक उसी के द्वारा पुनर्निर्मित होते रहे हैं। हमें बनाये रखने अथवा नष्ट कर देने में हमारे अपने हाथ इतने अधिक शक्ति-सम्पन्न है कि इस धरती पर उनकी शक्ति से अधिक लोमहर्षक और भयावह कुछ भी नहीं है। मनुष्य जो भी करता है, उसमें वही हाथ जीवित एवं निहित है, रचता हुआ और नष्ट करता हुआ, व्यवस्था और विध्वंस—दोनों का स्वतः सूत्रधार। वह एक पत्थर को हटाता है कि समस्त विश्व की योजना परिवर्तित हो जाती है। वह एक ढेला तोड़ता है कि फलों-फूलों के रूप में नूतन सौंदर्य विकसित हो उठता है और मरुभूमि पर उर्वरता का सागर लहराने लगता है।

प्राचीन दर्शन का एक तर्क आज भी प्रामाणिक मालूम होता है। नेत्रहीन और नेत्रवान दोनों में एक परमतत्व होता है जो उस सब को सत्यता प्रदान करता है जिसे हम सत्य समझते हैं और जो व्यवस्थित को व्यवस्था, सुंदर को सुंदरता, और प्रत्यक्ष वस्तु को स्पर्शमत्ता देता है। इसे मान लिया जाय तो निष्कर्ष निकलता है कि यह परमतत्व अपूर्ण, अधूरा अथवा आंशिक नहीं होता। यह तो हमारे इन्द्रिय-जनित ज्ञान की सीमित परिधि से परे है। यह अदृश्य को भी प्रकाशित कर देता है और मूकता जिस संगीतात्मकता को विजडित करती है उसे स्वर देता है। इस प्रकार मन स्वयं हमें यह स्वीकार करने के लिए विवश करता है कि हम बौद्धिक व्यवस्था, सौंदर्य और संगति के जगत में रहते हैं। इन विचारों के सारतत्व निश्चय ही अपने विरोधियों अव्यवस्था, अशुभ एवं असंगति का शमन कर देते हैं। इस तरह अंधेपन और बहरेपन का अस्तित्व ही उस अपार्थिव मन में नहीं रहता जो दार्शनिक दृष्टि से वास्तविक जगत है। ये तो नाशवान भौतिक बोध के साथ-साथ बहिष्कृत हो जाते हैं। दृश्यमान वस्तुएं जिसका प्रतीक हैं वही वास्तविकता मेरे चित्त के सम्मुख प्रकाशमान है। अपने कमरे में डगमग कदमों से

जब मैं चलती हूँ तो मेरी चेतना गरुड़ के पंख लगाकर नभ की ओर उड़ चलती है और कभी भी तृप्त न होनेवाली दृष्टि से शाश्वत सौन्दर्य को निहारती है।

सभी तरह की सीमाएँ वास्तव में आत्मविकास करने और सच्ची स्वाधीनता पाने के लिए शुद्धि के साधनों की भांति हैं। वे हमारे हाथों में दिये गये औज़ार हैं जिनकी मदद लेकर हम उन पाषाणों और कठोर अवरोधों को हटा फेंकते हैं, जो हमारे अस्तित्व के उच्चतर गुणों को छिपाये रखते हैं। सीमाएं हमारी आँखों पर बँधी निस्संगता की पट्टी उतार फेंकती हैं और हम उस बोझ को देख पाते हैं, जो अन्य लोग उठाये चल रहे है। तब हम करुणार्द्र हृदय की प्रेरणाओं के वशीभूत होकर उनकी सहायता करने का पाठ सीखते हैं।

निराशा मन पर कहीं एक बार हावी हो जाये, बस जीवन में अस्तव्यस्तता, अहंभावना और आत्म-व्याकुलता भर जायेगी। व्यक्तिगत अथवा सामाजिक अव्यवस्था का केवल एक इलाज है – विस्मरण और विध्वंस। निराशावादी कहता है – "आओ खायें, पियें और मौज करें, क्योंकि कल हमें मर जाना है।" यदि मैंने अपने जीवन को निराशावादी की आंखों से देखा होता तो सत्यानाश ही हो जाता। मैं व्यर्थ ही उस ज्योति की खोज में भटकती, जो मेरी आँखों को नहीं छूती, और उस संगीत की खोज में भी, जो मेरे कानों में नहीं गूंजता। मैं रात-दिन याचना करती रहती और कभी भी संतुष्ट न होती। मैं सबसे अलग निपट एकांत में जा बैठती और भय तथा निराशा से ग्रस्त रहती। लेकिन चूंकि मैं अपने तथा दूसरों के प्रति एक प्रकार का कर्तव्य समझती हूँ कि खुश रहूँ इसलिए मैं उस यातना से मुक्त हूँ जो किसी भी शारीरिक अभाव से बदतर है।

मैं यह दिखावा नहीं करती कि संसार की समस्याओं का सम्पूर्ण निदान मुझे ज्ञात है; परन्तु संसार को सही रास्ते पर लाने के उत्तर-दायित्व का एक प्रकार का सात्विक बोध मुझे होता रहता है। बहुत-सी बातों की ज़िम्मेदारी मैं महसूस करती हूँ; भले ही उनसे मेरा कोई सरोकार न हो जबकि अकसर मैं ऐसे विषयों पर चुप रह गयी हूँ जिनमें मेरी गहरी दिलचस्पी थी। मुझे डर लगता रहा है कि कहीं मेरे विचारों के लिए दूसरों पर दोपारोपण न किया जाये। यह विश्वास करने की इच्छा मुझे कभी नहीं हुई कि मानव-प्रकृति में परिवर्तन नहीं हो सकता। यदि वह बदली न भी जा सके तो भी मुझे यक़ीन है कि उसे सँवारकर उपयोगिता की दिशाओं में प्रवाहित किया जा सकता है। मैं समझती हूँ कि जीवित रहने का उद्देश्य

'धन नहीं, जीवन है'; जीवन जिसमें प्रेम, सुख और प्रसन्नतायुक्त श्रम की समस्त विशेषताएँ संयुक्त हैं। मेरा ख़याल है कि युद्ध हमारे आर्थिक ढाँचे का अनिवार्य परिणाम है। और भले ही मैं गलती पर होऊँ, मुझे यह भी विश्वास है कि किसी भी आन्दोलन के कारण सत्य की तनिक भी हानि नहीं होती, लाभ बहुत-कुछ सम्भव है।

हम जितनी अधिक बार और जितनी दृढ़ता से अपने कामों को अंजाम देने में जुट जाते हैं उसीके अनुपात में काम करने की हमारी इच्छा भी तीव्र होती जाती है और दिमाग़ उस दिशा में चलने लगता है। तभी उस में वास्तविक श्रद्धा जागती है। यदि हम किसी संकल्प अथवा सुंदर भावना को कोई परिणाम निकले बग़ैर ही नष्ट हो जाने दें, तो यह हाथ आये अवसर को खोने से भी अधिक है। सच तो यह है कि इससे 'भावी लक्ष्यों की पूर्ति और भावोद्‌बोध जड़ हो जाता है। अमूर्त के लिए हमारे पास साहस की कमी नहीं है, कमी है मूर्त के लिए यथेष्ट साहस की। कारण यह है कि शौर्य के दैनिक ओस-बिन्दुओं को हम भाप बन कर उड़ जाने देते हैं।

अपने जीवन में प्रतिदिन मैं तीन बातों के लिए ईश्वर को धन्यवाद देती हूँ कि उसने अपने कार्यों को जानने का सामर्थ्य मुझे प्रदान किया है; और अधिक धन्यवाद देती हूँ इसलिए कि उसने मेरे अंधियारे में श्रद्धा का दीपक प्रतिष्ठित किया है; सबसे अधिक धन्यवाद देती हूँ यों कि मैं एक ऐसे जीवन की कल्पना कर सकती हूँ जो प्रकाश, फूलों और दिव्य संगीत के कारण आनन्दप्रद होगा।

विश्व के अनंत रहस्य हम पर उतनी ही मात्रा में प्रकट होते हैं, जितनी मात्रा में उन्हें ग्रहण करने की सामर्थ्य हममें होती है। हमारी दृष्टि की सूक्ष्मता इस पर निर्भर नहीं करती कि हम कितना देख पाते हैं, बल्कि इस पर कि हम कितना अनुभव करते हैं। अब भी केवल ज्ञान से सौंदर्य की सृष्टि नहीं होती। प्रकृति अपने श्रेष्ठतम गीत उन्हें सुनाती है, जो उसे प्यार करते हैं। प्रकृति अपने रहस्य उन पर नहीं खोलती, जो उसके पास केवल विश्लेषण की इच्छा पूरी करने के लिए, या तथ्य इकट्ठे करने लिए आते हैं। प्रकृति तो उनके आगे प्रकट होती है जो उसके नानाविध रूपों में उच्च एवं कोमल भावनाओं का आभास पाते हैं।

प्राचीन कथन है, जिससे बेहतर कहा भी नहीं जा सकता कि 'तमसो मा ज्योतिर्गमय'। कोई भी व्यक्ति अपने भीतर झाँक कर देखे, उसे मालूम हो सकेगा कि उसकी कौन-सी आकांक्षाएँ अपने अथवा अपने संगियों के कल्याण की ओर उन्मुख हैं। कुछ लोग तो इसे अपने सहज ज्ञान के कारण जान जाते हैं; लेकिन बहुत से लोगों में यह सहज ज्ञान नहीं होता। फिर भी, सतत् अन्वेषण करते रहने पर वे अपनी अपूर्णताएँ, खराबियाँ, बुराइयाँ—कुछ भी नाम दीजिए, उन्हें जान जायेंगे। फिर वे यह भी जान जायेंगे कि उनके जीवन को अधिक स्वतंत्र और सुखी होने से रोकनेवाली इन बाधाओं को क्योंकर हटाया जा सकता है।

हमारे जीवन के वही दिन स्वर्णाक्षरों में अंकित होने-योग्य हैं जिनमें हम उन लोगों से मिलते हैं जो हमें किसी सुंदर कविता की भाँति चमत्कृत कर दें, जो हाथ मिलाकर हमें अकथनीय सहानुभूति दे दें, और जिनके मधुर, सम्पन्न स्वभाव हमारी उत्सुक, अधीर भावनाओं को एक ऐसी अद्भुत शांति प्रदान करें जो अपने सार रूप में दैवी हो। तब हमें घेरे रहनेवाली उलझनें, चिड़चिड़ाहटें और परेशानियाँ बुरे सपनों की तरह बीत जाती हैं, और हम जागते हैं तो आँखों से देखते हैं—ईश्वर की सच्ची दुनिया की सुंदरता को, और कानों से सुनते हैं उसके संगीत को। हमारे दैनंदिन जीवन की सामान्य क्षुद्र बातें अचानक ही प्रकाशमान सम्भावनाओं में निखर उठती हैं। एक शब्द में कहें कि जब इस तरह के संगी-साथी पास रहते हैं तो हम महसूस करते हैं कि सब-कुछ ठीक है। सम्भव है

कि हमने उन्हें पहले कभी न देखा हो, और यह भी मुमकिन है कि दुबारा कभी उनसे हमारा साबिका न पड़े; लेकिन उनके शान्त, कोमल स्वभाव का असर हम पर यों होता है मानो हमारे असंतोष के घाव पर फाहा रख दिया गया हो, और हम उसके आरामदेह स्पर्श को महसूस करते हैं उसी तरह, ज्यों सागर अनुभव करता है कि पर्वत से उतरनेवाली धारा उसके अन्तस्तल को स्वच्छ बनाये दे रही है।

समस्त कला, प्रकृति और संगत मानव-विचार के अनुसार हमें ज्ञात है कि व्यवस्था, अनुपात और आकार सौंदर्य के आवश्यक उपकरण हैं। व्यवस्था, अनुपात और आकार होने को तो स्पर्श-संवेद्य हैं, लेकिन वे सौंदर्य तथा लय-बोध से भी कहीं गहरे हैं। वे प्रेम और श्रद्धा की भाँति हैं। उद्वेगों पर बस तनिक-सा निर्भर करते हुए वे एक तरह की आध्यात्मिक प्रक्रिया से प्रकट होते हैं। मन में यदि पहले से ही तत्वों में जीवन-संचार करनेवाली आत्म-कुशाग्रता न हो तो व्यवस्था, अनुपात, और आकार मन में सौंदर्य का अमूर्त भाव नहीं संचारित कर सकते। बहुत से लोक बढ़िया आँखें होते हुए भी देखने के मामले में अन्धे होते हैं। लेकिन यही तो हैं वे लोग जो ऐसों की दृष्टि मर्यादित करने का दुःसाहस करते हैं, जिनके पास एक-दो इंद्रियाँ भले ही न हों लेकिन इच्छा, आत्मा, आवेग, और

कल्पना अवश्य होती है। ऐसी श्रद्धा महज मखौल है, जो हमें यह नहीं सिखाती कि हम भौतिक संसार से कहीं अधिक अकथनीय रूप से समन्वित संसार की रचना कर सकते हैं। मैं अपनी दुनिया बेहतर बना सकती हूँ, क्योंकि मैं ईश्वर की संतान हूँ—समस्त ब्रह्मांडों के स्रष्टा उस परम आत्मा के एक कण की उत्तराधिकारिणी हूँ।

हम जहां भी देखें, समय अथवा इतिहास में—हाथ को काम करते हुए, बनाते हुए, खोजते हुए, बर्बरता को सभ्यता में ढालते हुए पाते हैं। हाथ मानो काम की शक्ति एवं श्रेष्ठता का प्रतीक है। भौतिक शक्तियों के नियंता-यंत्रकार का हाथ, जो टुकड़े करता, आरा चलाता, काटता और निर्मित करता है, इस संसार में उतना ही उपयोगी है जितना वह कोमल हाथ, जो जंगली फूल को रंगता अथवा यूनानी अस्थि-पात्र को गढ़ता है; और उतना ही उपयोगी हाथ है उस राजपुरुष का जो कानून रचता है। आँख 'हाथ से यह नहीं कह सकती कि मुझे तेरी कोई जरूरत नहीं। हाथ धन्य हैं! काम करने-वाले हाथ बार-बार धन्य हैं!

जीवन अपनी सारी शक्ति अतीत से नहीं प्राप्त करता। हर शिशु के जन्म के साथ प्रकृति सारी पिछली परम्पराएँ मिटा देती है, सिर्फ उनको छोड़कर जो मनुष्य ने स्वयं अपने ऊपर लादी हैं। अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करता हुआ बच्चा क्या किन्हीं परम्पराओं के अनुसार साँस लेता, सोचता, बोलता या अंगों को चलाता है! हमें इसकी खोज करनी चाहिए कि जिन परम्पराओं के लिए हम विलाप करते हैं, वे कहीं जड़ मस्तिष्कों की बैसाखियां अथवा कमज़ोर पड़ गयी इच्छाशक्तियाँ तो नहीं हैं! और यदि ऐसा है तो हमें परम्पराओं को थूनी लगाकर टिकाने का काम बन्द कर देना चाहिए। अच्छा हो कि हम अपने बाद अपने प्रेरणादायक जीवन छोड़ जायें, जो भावी युगों को, हमारे अपूर्ण स्वप्नों, अर्ध-ज्ञान और अर्ध-देवताओं को तथा हमारे मन और शरीर के विकारों को मिटाकर उच्चतर लक्ष्यों की ओर अग्रसर होने की शक्ति प्रदान करें। हमारा मुख्य संकट यह नहीं है कि अतीत की उपलब्धियाँ मिटती जा रही हैं; हमारा असली खतरा है प्रचार, जिसके पीछे न सद्भावना है, न श्रद्धा।

मेरा एक दृढ़ विश्वास यह है कि कुल मिला कर मानव-स्वभाव की उच्चता अभी तक पूरी-पूरी विकसित नहीं हो पायी है। महान् आत्माएँ मनुष्य के हृदय और मस्तिष्क की बुलंदियाँ जाहिर करती हैं जो भले ही दबी-छुपी हों, किन्तु दूसरे कमतर लोगों के पास भी हैं। ज्यादातर लोग अपने भीतर की इसी सहज अच्छाई के कारण दूसरों की अच्छाई को उसी तरह देखकर समझ पाते हैं जिस तरह पाठक के भीतर छुपा हुआ कवि उसे अच्छी कविता का रसिक बनाता है।

विश्वास, विचारों का स्वागत करता है और दूसरे राष्ट्रों का हाथ, हाथ में लेता है। कोई भी राष्ट्र किसी दूसरे पर राज्य चलाने के लायक बुद्धिमान नहीं है। यही कारण है कि साम्राज्य मिटे हैं और मिटते जा रहे हैं। किसी दूसरे देश की सभ्यता जो वहाँ के लोगों के सोचने के ढंग का ही दूसरा नाम है, भाषा के अंतर के कारण लगभग अज्ञेय हो जाती है, विशेषतः उस समय जब दूसरे के मन में कुछ सुनने या समझने की इच्छा ही न हो। कोई भी दो व्यक्ति एक दूसरे को पूरा-पूरा नहीं समझ सकते। घनिष्ठ से घनिष्ठ मित्र भी वास्तव में एक दूसरे को नहीं जानते, किंतु वे आपस में एक दूसरे के प्रेरणा देनेवाले शीलसम्पन्न सुझावों और सत्य के नये पहलुओं से लाभान्वित होते हैं। इसी तरह अपना आध्यात्मिक ज्ञान या सभ्यता

एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को विनम्रतापूर्वक उसके दृष्टिकोण को समझ कर ही दे सकता है। अपना दृष्टिकोण दूसरे से बिल्कुल अलग तरह के अर्जित ज्ञान का नाम है। इसके बाद ही दो राष्ट्र विचारों की ऐसी सस्वरता पा सकते है जिसमें उनके विश्वास एक दूसरे से मिलकर भी अपनी-अपनी झंकार देते रह सकते हैं। कहीं-कहीं ऐसा हुआ है; विश्वास से यह समारोह विश्व भर में फैलेगा।

वसंत और पतझड़, बोनी और कटनी, वर्षा और धूप, शिशिर की ठंड और ग्रीष्म की गर्मी – हर चीज बदलती है। सब वस्तुओं की क्षण-भंगुरता को देख कर हम मृत्यु की ध्रुवता पर ही ज़ोर क्यों दें? क्यों न हम निर्भय जीवन और मृत्यु दोनों का समान रूप से मुकाबिला करें?

एक ख़याल अक्सर मेरे मन में आता रहता है, और जब मैं पढ़ती और सुनती हूँ तो उसकी सत्यता के विषय में मुझे अधिकाधिक भरोसा होता जाता है। हमारा शब्द-भंडार अभी तक हमारे भीतरी विकास के मुक़ाबिले में नहीं बढ़ा। मुझे ऐसा लगता है कि दोषों और दुर्गुणों ने अध्याय के अध्याय भर दिये हैं जब कि गुणों ने एक छोटा-मोटा पृष्ठ ही भरा है। कदाचित् इसका कारण यह है कि सत्य अपने खंड-खंड होने देना और उन पर अलग-अलग 'लेबिल' लगवाना उस तरह पसंद नहीं करता जिस तरह असत्य करता है। बात चाहे जो हो, मुझे अभी 'अच्छाई ढूँढ़ने' के लिए कोई शब्द नहीं मिला, 'बुराई ढूंढने' के लिए शब्द है। किसी एक भी अच्छाई के पहलू को सहायता पहुँचानेवाले विचार को संज्ञाहीन रहने देना शक्तिशाली रेडियो अणुओं की सक्रियशीलता खोने के समान है। अछूते स्रोतों से उत्पन्न होनेवाली अनोखी दुनिया के निर्माण के लिए विश्वास के मन में असीम सौंदर्य और अधिकाधिक कार्यक्षम शब्द होने चाहिए।

आन्तरिक सत्यों में हमारी अन्धता के कारण कोई अंतर नहीं पड़ता। अधिकतम सौंदर्य-सृष्टि तक केवल कल्पना के द्वारा ही पहुँचा जा सकता है; यह बात जितनी हम पर लागू है उतनी ही आंखों वालों पर भी लागू है। जब तुम जो कुछ नहीं हो, वह होना चाहते हो – याने कुछ सूक्ष्म, महान् या शिव – तब तुम अपनी आँखें बन्द कर लेते हो और एक स्वप्नमय क्षण के लिए वह हो जाते हो, जो तुम्हें होना है।

इतिहास में: हम :अत्यंत वैभवपूर्ण यांत्रिक साधनशीलता के उत्तराधिकारी हैं। गौरव के साथ अन्य युग से उसे जोड़ कर हम यह भूल गये हैं कि सभ्यता तब तक मानवतापूर्ण या भावनीय नहीं होती जब तक वह मनःप्राण से पुनर्विचारित और पुनर्जीवित नहीं है। औजार तो एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को सौंप सकती है, किन्तु व्यक्तित्व और प्रतिभाएँ नहीं सौंपी जा सकतीं। हमारी अद्यतन भयानक भूल, जिसे रोकना हमारी सुरक्षा के लिए आवश्यक है, उस पूजनीय को भुला कर औजारों की पूजा करना है, जिसकी करुणा ही औजारों के छुपे हुए अकल्पनीय सौंदर्य को प्रकट कर सकती है और उनको आकाश तक हल्की भाप बना कर उठा सकती है कि वे नवीन जीवन देनेवाले आनंद के बादल बन कर बरस सकें। हम आत्माएँ हैं, चीजें नहीं — किंतु चीजें भी एक प्रकार की आत्माएँ हैं जो मौन रह कर फिर से

विचार और सर्जनात्मक प्रेरणा होने की भीख माँगती रहती हैं। उनकी वाणी का अनुवाद ही कविता है, वही उनकी प्रार्थना है। हमारी आत्माओं के प्रतिनिधि नहीं होते। हम आत्मा के लिए आवाज़ लगानेवाले एक विशाल यंत्र के मध्यस्थ मात्र हैं।

किंवदंती के अनुसार जब ईसा पैदा हुए तो आकाश में सूर्य नाच उठा। पुराने झाड़-झंखाड़ सीधे हो गये और उनमें कोपलें निकल आयीं। वे एक बार फिर से फूलों से लद गये और उनसे निकलने वाली सुगंध चारों ओर फैल गयी। प्रति नये वर्ष में जब हमारे अंतर में शिशु ईसा जन्म लेता है, उस समय हमारे भीतर होनेवाले परिवर्तनों के ये प्रतीक हैं। बड़े दिन की धूप से अभिसिक्त हमारे स्वभाव, जो कदाचित् बहुत दिनों से कोंपल-विहीन थे, नया स्नेह, नयी दया, नयी कृपा और नयी करुणा प्रगट करते हैं। जिस प्रकार ईसा का जन्म ईसाइयत का प्रारंभ था, उसी प्रकार बड़े दिन का स्वार्थहीन आनंद उस भावना का प्रारंभ है, जो आनेवाले वर्ष को संचालित करेगी।

कितनी बार मैं यह सोच कर उदास हो जाती हूँ कि मेरी असमर्थताओं के कारण मैं दरिद्रों, दबे हुओं और अज्ञों के लिए इतना नहीं कर पाती जितना इन असमर्थताओं के न रहने पर कर सकती थी; किंतु जापानी मुहावरे के मुताबिक, यह तो हिर्स के पात्र पर बड़बड़ाना है।

मुझे इसकी प्रतीति है कि मर्त्य मनुष्य समय के सिंधु में विलीन हो जानेवाली नन्हीं-नन्हीं बूंदें हैं। एक व्यक्ति या एक कौम दैवी मानस के उद्दश्य को समझने की दिशा में कुछ और दूर जाने के अतिरिक्त और क्या कर सकती है? जो व्यक्ति या क़ौम युगों के अन्तराल में बहनेवाली सदाशयता को वहन करने का श्रेष्ठ माध्यम बनती है, वह बड़े से बड़ा सौभाग्य पा लेती है।

एक और सहारा देनेवाला विश्वास मिला है कि कोई सदा जागृत शक्ति जिस तरह पृथ्वी की गति को संचालित करती है, उसी तरह एक नन्हीं गौरैया की उड़ान को भी संचालित करती है। वही आदमी के कार्य-कलापों पर निगाह रखती है और वही उसके प्रयत्नों को बल देती है। मेरा यही विश्वास है कि ईश्वर हममें व्यक्तिगत रूप से दिलचस्पी रखता है तथा थकी और बूढ़ी दुनिया को जिसमें हम अपरिचितों और शत्रुओं की तरह रहते हैं, सुंदर बनाता है।

सम्पन्न वे होते हैं जो सचेतन शक्ति पर विश्वास कर पाते हैं। इसके कारण यह असंदिग्ध विश्वास दृढ़ हो जाता है कि मानवता दुष्टता के जाल, षड्यंत्र और लोभ से बच कर निकल सकती है। प्रभु का कटक उनके पास ही कहीं खीमा गड़ाये पड़ा है, इस ज्ञान के बल पर वे हमलावरों की जल-सेना, थल-सेना, शस्त्राओं और दबे-छुपे जालों से नहीं डरते।

वे भरोसे के साथ अपने-आप से यह कहते हैं कि एक ऐसा दिन आयेगा कि सब आदमी प्रेमी बन जायेंगे और पृथ्वी पर शांति तथा सदाशयता की ऐसी धूप निकलेगी कि आदमी के तमाम कष्ट उसे छूकर उड़ जायेंगे।

मुझे एहसास है कि बहुतों को सृष्टिकर्ता के विषय में मेरा यह विचार दाकियानूसी लगेगा। एकाध बार मैं अपने भीतर प्रभु की आवाज सुनने में असफल हो जाती हूँ और शंकाएँ मेरे मन को छू लेती हैं, किंतु मैं यह विश्वास नहीं छोड़ सकती, क्योंकि अगर मैं यह विश्वास छोड़ दूं तो संसार के अंधेरे में मेरे पास कोई प्रकाश न बचे।

मेरी ज़िंदगी, "मित्रता का इतिहास-क्रम है"। मेरे मित्र—वे सब जो मेरे आसपास हैं—प्रतिदिन मेरी दुनिया को नयी बना देते हैं। उनके स्नेहमय बर्ताव के अभाव में अपने सारे साहस के बावजूद ज़िंदगी बिताना मेरे लिए कठिन हो जाता है; किंतु स्टीविंसन की तरह मैं जानती हूँ कि कल्पना की अपेक्षा काम करना अधिक अच्छा है।

हाथ को ध्यान से देखो तो तुम्हें दिखेगा कि वह आदमी की सच्ची तस्वीर है, वह मानव-प्रगति की कहानी है, संसार की शक्ति और निर्बलता का माप है। मानव-जाति का समस्त कल्याण इसके साहस, इसकी दृढ़ता, इसके सातत्य का परिणाम है। सशक्त और परिश्रमशील कठोर हाथों की विश्वास-पात्रता एक और अशेष, सबके जीवन का सहारा है। प्रतिदिन हजारों आदमी रेलगाड़ी में जाकर बैठ जाते हैं और आश्वस्त भाव से अपना जीवन उस हाथ में सौंप देते हैं जो इंजिन को चलाता है। ऐसी जिम्मेदारी कल्पना को जाग्रत करती है। किंतु इससे भी अधिक प्रभाव यह सोच कर मन पर पड़ता है कि आदमी का दैनंदिन जीवन उन अनन्त और अज्ञात हाथों पर निर्भर है, जो अपने अस्तित्व को प्रगट करने के लिए कभी भी किसी नाटकीय ढंग से ऊपर नहीं उठे।

किसी बड़े दुःख का अनुभव गुफा में घुसने के समान है। अंधकार, एकाकीपन और घर की याद हमें 'दबोच लेते हैं। उदासी में चमगादड़ों की तरह दुखद विचार हमारे चारों तरफ फड़फड़ाते हैं। हमें लगता है कि दुःख के कारागार से निकल भागने का कोई रास्ता नहीं है, किंतु प्रभु ने अपनी स्नेहमय करुणा के अनुरूप अदृश्य दीवाल पर विश्वास का दिया धर दिया है, जो हमें धूप से भरी उस दुनियाँ में पहुँचायेगा जहाँ काम और सेवा, और मित्र हमारा स्वागत करने के लिये खड़े हैं।

“ज्ञान शक्ति है।” बल्कि ज्ञान, आनंद है, क्योंकि ज्ञान—विस्तृत गंभीर ज्ञान—अर्जित करना मिथ्या और सत्य साध्यों, क्षुद्र और महान् बातों का अंतर जानना है। जिन विचारों और कार्यों ने मनुष्य की प्रगति को चिन्हित किया है, उन्हें जानना, शताब्दियों के अंतर में धड़कनेवाले विशाल मानव-हृदय पर हाथ धरने के समान है। और, अगर कोई इन धड़कनों में स्वर्ग की दिशा में बढ़ने की कोशिश का भान नहीं करता तो निश्चय ही जीवन के संगीत के प्रति उसके कान बहरे हैं।

नेत्रहीनता का संकट जबर्दस्त है,
उसका परिमार्जन नहीं हो सकता;
किन्तु फिर भी सेवा, मित्रता, हँसी, कल्पना, बुद्धि – महत्व की इन चीजों का वह हरण नहीं कर पाती। भाग्य का नियंत्रण गोपनीय आंतरिक संकल्प के बल पर होता है। अच्छे बनने, प्यार करने, प्यार किये जाने और अधिक बुद्धिमान बनने के लिए अन्तिम सीमा तक आकर विचार करने के संकल्प का सामर्थ्य हममें है। प्रभु की अन्य संतानों की तरह ये आत्मज शक्तियाँ हमें भी प्राप्त हैं। इसलिए हम भी बिजली देखते और 'सिनाई' का गर्जन सुनते है। उसके बादलों की गड़गड़ाहट सुनते हैं। हम भी उस निर्जनता और सूनेपन में से गुज़रते है जो हमें पाकर प्रसन्न होती है और जब हम उसमें से गुज़रते है तो भगवान मरुस्थल को किसी गुलाब की तरह विकसित कर देता है। हम भी उस भूमि में प्रवेश करते हैं जिसका हमें वचन दिया गया था, ताकि हम आत्मा की निधियाँ और प्रकृति तथा जीवन की अनदेखी अमरता को पा सकें।

संसार में जब तक तरुणाई है तब तक सभ्यता का उल्टा होकर बहना संभव नहीं है। भले ही तरुणाई जिद्दी हो; किंतु वह अपनी निर्धारित मंज़िल पर बढ़ेगी। युगों से दारिद्र्य, दुख, अज्ञान, युद्ध, असौंदर्य, और दासता के विरुद्ध होनेवाली लड़ाई में तरुणाई ने अपने शत्रु पर लगातार कम-ज्यादा विजय पायी है। इसीलिए अधीर होकर मैं कभी नयी पीढ़ी से विमुख नहीं हो पाती। मुक्ति केवल इसी माध्यम से मिलनेवाली है।

मानव-मानस की परम्परा को सम्पन्न करने के प्रयोग अभी प्रारंभ ही हुए हैं; उन्हें सफल बनाने के लिए हमें अपनी विश्वासशीलता की सीमा तक जाना पड़ेगा। आज की परिस्थिति में श्रद्धा की कमी के कारण इन प्रयोगों के अंधकार से भरी खाइयों में गिर पड़ने का भय है। अगर हम अंधकार से भरी इन खाइयों में ही निगाहें गड़ा कर ताकते रहें तो ये भी हमसे आँखें मिलायेंगी और हम उनमें गिर पड़ेंगे। हमें ये बुरी आदत छोड़ देनी चाहिये। मन को पाला मार जाने वाली परम्पराएँ इन आदतों से बल पाती हैं और साधना में लगा हुआ व्यक्ति अपने विश्वास की परिपूर्णता में खुल कर नहीं खेल पाता। प्रगति के लिए उदार जोखम उठाना अनिवार्य है।

हम जिन उच्चादर्शों पर चलते हैं, यदि उनके शिथिल या विनष्ट होने का भय उत्पन्न होता भी है, तो समझिये वे स्थानिक तौर पर और थोड़े समय के ही लिए हमारी आँखों से ओझल हो सकेंगे। वे उस असीम और अविनश्वर शक्ति के द्वारा प्रगति करेंगे जिसने कुछ थोड़े से सभय, अज्ञ और साधारण शिष्यों में उस रचनात्मक शक्ति को जाग्रत किया, जिसके फलस्वरूप समस्त जाति के आदर्शों तथा कार्यकलापों के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक घटना घटित हुई। मेरा तो विश्वास है कि आज के संसार में जो इतना कोलाहल मचा हुआ है, उसका एकमात्र कारण इन्हीं आदर्शों की दिशा में चल कर उन तक पहुँचने का कठिन प्रयास है। लोभ और घृणा, भय और ईर्ष्या तथा असहिष्णुता जैसी ताकतें जिन्हें वे नष्ट करना चाहते हैं, इसीलिए आज अपेक्षाकृत अधिक विरोध उत्पन्न कर रही हैं। आज की स्थिति पूर्व-जैसी ही है अर्थात गहराई के मुख के ऊपर अँधेरा छाया हुआ है।

आज भगवान की शक्ति पानी के मुख पर चमक रही है। आनेवाले समय में यह प्रकाश हमें अधिकाधिक सच्चे 'ईस्टर' की ओर ले जायेगा और उस प्रकाश में हमें धरती-तल पर स्वर्ग की सभ्यता की झलक दिखायी देगी।

यदि हमारा कोई प्यारा साथी किसी छोटे और असुविधाओं से भरे हुए घर को बदल कर एक ऐसे भवन में पहुँच जाये जो धूप से उजला हो और जिसके फर्श में प्रसन्नता, आश्चर्य और सौंदर्य की अनन्त झलमलाहट हो, तो निःसंदेह हम दुखी नहीं होंगे। हम कहेंगे कि अमुक भाग्यवान निकला और मन ही मन हम भी उस समय की कल्पना करेंगे जब हम स्वयं अपने रोजमर्रा के धंधों के बोझ को एक तरफ धर कर उसके सौंदर्य और प्रकाश से भरे हुए घर में जा बसेंगे।

हमें कवियों ने बताया है कि रात किस प्रकार आश्चर्यों से भरी हुई एक चीज़ है। अंधता की रात्रि के पास भी अपने आश्चर्य हैं। प्रकाशहीन अंधेरा, अज्ञान और संवेदनहीनता की रात का नाम है। नज़रवाले और अंधे एक दूसरे से अलग हैं, परन्तु अपनी इंद्रियों में नहीं बल्कि उनके उपयोग में, जो हम इन्द्रियों से परे होकर कल्पना और साहस के साथ ज्ञान की खोज के लिए करते हैं।

जीवन को सह्य बनाने के लिए
आवश्यक है कि हम विश्वास करें
कि इस अनिश्चय का, इस अंधेरे का जिसमें हम संघर्षरत हैं, किसी दिन प्रकाशपूर्ण हल प्राप्त हो जायेगा, और इस क्षण भी हमारे पास उस ज्ञान के ऐसे छोटे-मोटे चिह्न हैं, जो प्रकाश से आँखें चार होने पर हमें मिलेगा।

जो सोच-विचार नहीं करते उन्हें विज्ञान धर्म से बहुत दूर मालूम पड़ता है। वह तो स्वयं हमें सतत् इस बात की चुनौती देता रहता है कि हम बौनों की तरह जीवन व्यतीत न करें। आखिरकार 'विज्ञान' उस विश्वास का ही नाम तो है जो काल्पनिक विकल्पों पर अपना सर्वस्व लगाकर चाहता यह है कि वह अज्ञात जगत की प्राप्ति की ओर मानवता के कदमों को अग्रसर करने के उपाय खोज सके। अनंत आविष्कारों और उपयोगी साधनों का अम्बार खड़ा करने की दिशा में उसकी हिम्मत तथा प्रयत्नशीलता और बीमारियों के विरुद्ध उसका अनोखा संघर्ष प्रगति की दिशा में अत्यन्त उत्साहवर्धक कार्य हैं। यदि साधारण विश्वास से विज्ञान को ऐसी प्रेरणा मिल सकती है जो हमें प्रकृति के एक के बाद दूसरे महान् सत्य तक पहुँचा सकती है, तो फिर विचारपूर्वक किया गया सर्वव्यापक विश्वास मानवात्मा के साम्राज्य में कितने अधिक दुर्ग जीत सकता है।

इतने पर भी हम अर्वाचीन, धार्मिक क्षेत्र में किस प्रकार का आचरण कर रहे हैं। हम उस महाद्वीप के तट पर, जिस पर अभी हमने पैर ही रखे हैं, खड़े-खड़े अपना दुखड़ा रो रहे हैं। मुझे यह

विश्वास नहीं था कि मैं कभी लोगों को इस प्रकार पस्त-हिम्मत और लाचार देखूंगी कि उनके मूलभूत आधार ही नष्ट-भ्रष्ट हो जायँ। हम लोग एक साथ ही अपने आपको आदमी और सितारों तथा अणुओं का साथी समझते हैं, हमारे लिए इस प्रकार की आध्यात्मिक लाचारी शर्मनाक बात है।

जब हम सब स्वार्थमय जीवन बिताने के लिए प्राय: मजबूर हैं तब यह आवश्यक है कि हमारे भीतर ऐसी कोई चीज़ हो जो इस प्रकृति को रोक सके। हमने अच्छे जीवन का वरण तय किया है। उसको सांगोपांग बनाने के लिए यह आवश्यक है कि इस प्रकार के जीवन का हमें कुछ पूर्वानुभव हो। हममें कुछ अधिक सुसंस्कृत प्रवृत्तियाँ यदि न होतीं तो फिर हमें अधिकाधिक पशुवत् बनने से कौन रोक सकता था? हम अपने लिए तब तक स्वतंत्रता से, विचारपूर्वक अपना सही रास्ता नहीं चुन सकते जब तक हमें भले और बुरे दोनों का ज्ञान न हो।

मैं अंधी हूँ और मैंने कभी भी इन्द्रधनुष नहीं देखा; किन्तु मुझे उसकी सुन्दरता के बारे में बताया गया है। मैं जानती हूँ कि उसकी सुन्दरता सदैव ही अधूरी और टूटी-फूटी होती है। वह आसमान पर कभी भी पूर्णाकार में प्रकट नहीं होता। यही बात उन सभी चीज़ों के बारे में सही है जिन्हें हम पृथ्वीवाले जानते हैं। जिस तरह इन्द्रधनुष का वृत्त खंडित होता है, उसी तरह जीवन भी अधूरा है और हममें से हरेक के लिए टूटा-फूटा है। हम ब्राउनिंग के इन शब्दों, "पृथ्वी पर टूटे हुए बिम्ब, स्वर्ग में एक पूर्ण चन्द्र" का अर्थ तब तक नहीं समझ सकेंगे जब तक हम अपने खंड जीवन से अनन्त की ओर कदम नहीं बढ़ा लेते।

अपने निर्दिष्ट लक्ष्य की ओर अग्रसर होने वाले उस युवक के शब्द-कोप में जो उसकी रंगीन दिशा में अपने शक्तिमान, शुभ्र और चमकदार डैनों से मुड़ता है, भय और पश्चात्ताप जैसे शब्दों के लिए कोई स्थान नहीं है। प्रसन्न रहो, प्रसन्नता की बातें करो। तुम्हारी खुशी से दूसरों में आनन्द की भावना जाग्रत होती है। तुम्हारे दुख के सिवाय संसार में वैसे ही बहुत अधिक मायूसी छायी हुई है। जो तुम्हें कठोर और अन्यायपूर्ण प्रतीत हों, उन चीजों के प्रति जितना चाहो उतना विद्रोह करो। अपने आक्रमक पक्ष को सदैव ही तीव्र बनाये रखना अच्छा है, जिससे जहाँ-कहीं भी गलतियाँ दिखायी दें, उन पर चोट की जा सके। किन्तु भविष्य की अच्छाई और उसके अधिक स्थायी होने के बारे में कभी शंका मत करो। इस बात पर कभी अविश्वास मत करो कि यह सृष्टि ईश्वर की है तथा महानकर्मा ज्ञानीजनों के समान हर साधारण जन भी सही कार्य करके उसके समीप पहुँचते हैं। तुम्हारी उपयोगिता संसार के उद्धार के लिए लूथर या लिंकन से कम नहीं है।

उन लोगों की मजलिस में शरीक हो जाओ जो जीवन के मरुस्थलों को अपनी करुणा-धारा से हरा-भरा बना देते हैं। आत्मा में स्वर्ग की एक कल्पना लेकर बढ़ो, और तब तुम अपने घर, अपने विद्यालय और संसार को भी उस कल्पना के अनुरूप बना सकोगे। तुम्हारी सफलता और सुख की कुंजी तुम्हारे ही पास है। बाह्य परिस्थितियाँ जीवन की

दुर्घटनाएँ हैं; उसके बाहरी जाल हैं। स्थायी और महान् सत्य तो प्रेम और सेवा हैं। आनन्द वह पवित्र अग्नि है जो हमारे उद्देश्य को उष्ण और बुद्धि को प्रज्ज्वलित रखती है। आनन्द-विहीन कार्य शून्यवत् हो जायेगा। प्रसन्न रहना तय कर लो; तुम और तुम्हारे आनंद से बाधाओं का सामना करने वाली अपराजेय सेना उत्पन्न हो जायेगी।

रूढ़ विचारों से मानवता के उद्धार की प्रक्रिया अत्यन्त धीमी है । मानव जाति रहन-सहन के नये तरीकों को आसानी से नहीं अपनाती। परन्तु मैं निराश नहीं हूँ । व्यक्तिगत रूप से मुझे शारीरिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है; किंतु इन्हींसे ऐसी शक्तिशाली ताक़तों का उद्भव होता है जो मुझे रुकावटों को पार करने में सहायक होती हैं । संसार की समस्यायों के बारे में भी यही सच है । यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम शक्ति भर आध्यात्मिक शिव-शक्ति का संगठन करें जिससे भौतिकता की अशिव शक्ति का मुकाबिला किया जा सके ।

हमें चाहिए कि हम अपने शक्ति के अनुकूल कार्यों के लिए नहीं, बल्कि कार्यों के अनुरूप शक्ति के लिए प्रार्थना करें, तथा अपने हृदय-द्वार को खटखटाते हुए सदैव असीम उत्साह से अपने सुदूर लक्ष्य की ओर अग्रसर होते रहें ।

अब मैं कदाचित ही अपने अभावों के बारे में सोचती हूँ और वे अब मुझे कभी भी उस तरह उदास नहीं बनाते जिस तरह पहले बना देते थे। मैं पहले ज़िन्दगी के बन्द दरवाज़े पर अपने स्वभाव और चित्त की प्रबल प्रवृत्तियों के कारण सर पटक कर और लड़ कर संघर्ष के बड़े कड़वे क्षणों का अनुभव करती थी। अब वैसा नहीं होता। मैं जानती हूँ कि बहुत-से लोगों को मुझ पर दया आती है क्योंकि मैं अपने में जीवन का कोई दृश्य प्रमाण नहीं दे पाती। वे मुझ 'बेचारी' के प्रति प्रायः करुणावन्त और एकाध बार अवमानना से भरे दिखते हैं, क्योंकि वे सारी चीज़ें जिन्हें वे जानते हैं इस 'बेचारी' के भाग्य में नहीं है। शोर-शार से भरे किसी बाज़ार के दायरे में मुझे देखकर वे ऐसे चौंक पड़ते हैं मानों उन्होंने 'ब्राडवे' की बड़ी सड़क पर कोई भूत देख लिया हो। ऐसे वक्त मैं मन-ही-मन हँसती हूँ और अपने आसपास

अपने स्वप्नों को इकट्ठा कर लेती हूँ। मेरे जीने का कारण ही शेष हो जाय अगर वह सत्य अपना कठोर चेहरा मेरे आगे मधुर माया (बशर्ते कि वह माया हो!) के घूंघट में न छुपाये जिसे वे अपनी समझ में देख पाते हैं। कोई परिभाषाओं को लेकर नहीं लड़ता अगर सार उसके हाथ लग जाये और चूँकि मैंने जीवन को आनंद और आकर्षण से भरा हुआ पाया है, मुझे लगता है सार मेरे हाथों लग गया है!

श्रद्धा हमें किसी असाधारण दान का आभारी नहीं बनाती -- हम उसके कारण जाग्रत अवश्य रहते हैं। यह कहना कि दूसरे ऐसा कर सकते हैं और हम नहीं, जानबूझ कर अपने को सीमित करना है। जो चीज़ें हमें चौंका देती हैं, यदि हम उनके प्रति सावधान रहें तो हममें जीने के प्रति वह अनुराग जागेगा जिसकी तुलना में सभी भौतिक उपलब्धियाँ तुच्छ हैं। यदि हम अपने अंतःकरण में इस सावधानी से प्रवेश करें कि हमारे लजीले स्वप्न और कोमल भावनाएँ नष्ट न हों, तो हमें अपने मन पर, जो धीरे-धीरे हमारी एकता और पूर्णता का शक्तिशाली रूप प्रकट करेगा, आश्चर्य हुए बगैर न रहेगा। मैं अपने पचास वर्षों के अखंडित अनुभव के आधार पर कह सकती हूँ कि हम जैसे-जैसे अपने ऊपरी जीवन से हट कर अपने आंतरिक आनंद में प्रविष्ट होंगे हम अधिक विकास करेंगे। आनंद की एक मात्र संतोषप्रद व्याख्या मेरी समझ से तो परिपूर्णता ही है -- हरेक की अपनी भावनाएँ, स्वप्न और बुद्धि का उस अज्ञात संसार से सामंजस्य, जो यह राह देख रहा है कि उसकी जाँच-पड़ताल हो और उसे कोई अपनाये।

मुझमें जो अनेक अंहपूर्ण तत्व हैं उनके साथ समझौता करने में कोई लाभ नहीं है। मैं स्वयं अपनी थाह नहीं पा सकती। अपने आपसे मैं ऐसे प्रश्न पूछती हूँ कि जिनका उत्तर खुद नहीं दे सकती। जिस समय मैंने खुशी की अपेक्षा की थी उस समय मैंने अपने हृदय को कसकते देखा है। जब मैंने मुस्कराने के लिए ओंठ खोले तभी आँखें सजल हो उठीं। मैं प्रेम, भाईचारे और शांति का उपदेश देती हूँ, किन्तु मुझे इनके विरोधी भावों की प्रतीति भी होती है; इतना ही नहीं, अनेक बार मैं तलवार घुमाते हुए, युद्ध की तैयारी में रत हो जाती हूँ।

मेरा ख्याल है कि हर प्रामाणिक विश्वास को न्याय मिलना चाहिए, किन्तु फिर भी सोने के साम्राज्य के हामियों के विरुद्ध मैं चीख उठती हूँ। मुझे उस मनोदशा का अनुभव है जब कि शांति, भाईचारे और विश्वप्रेम की सम्पूर्णता अत्यधिक दूर दिखायी पड़ती है और मैं फूट, विद्रोह और युद्ध के जुलूसों की दिशा में आँखें लगा देती हूँ। सेंट पाल की यह बात मानों मेरी बात है कि मुझे मनुष्य के अंतरतम से सम्बंधित

ईश्वर के नियमों से हर्ष होता है, किन्तु मेरे साथियों में मैं जो प्रवृत्ति देखती हूँ वह मेरे मन के आदेश के विपरीत होती है....मुझे पूर्ण विश्वास है कि अन्ततः प्रेम से ही सब कुछ ठीक होगा। किन्तु मैं अपने आपको उन दबे हुए लोगों के प्रति सहानुभूति दिखाने से भी नहीं रोक पाती जो अपने सही अधिकारों की प्राप्ति के लिए शक्ति का उपयोग करते हैं।

अधिकांश लोगों को जो चीज़ें श्रम और अध्ययन के योग्य बनाती हैं सो तो समुद्र-तट पर फैली हुए सिकता-कणों की तरह अनगिनत हैं; किंतु पंचेद्रियों से परे के प्राणपोषक सत्यों तक पहुँचने का मार्ग तो श्रद्धा के ही द्वारा आलोकित होता है। श्रवण और दृष्टि-शक्ति के अभाव के कारण अपने भौतिक अनुभवों की विश्रृंखलता का तारतम्य मुझे अपनी श्रद्धा से प्राप्त होता है—मानो वह कोई दार्शनिक विचार-पद्धति हो। दूसरों की तरह मेरी आत्मा के भी आँखें हैं। श्रद्धा से मैं एक दुनिया रचती हूँ और उसे ताकती हूँ। अपने दिन और रातें मै बनाती हूँ, बादलों को अग्निशिखाओं के रंग देती हूँ और देखो कि मेरी अर्द्धनिशा नये तारों से जगमगाती है।

सिद्ध करने की झंझट में मैं क्यों पड़ूँ। क्या कुछ भी सिद्ध किया जा सकता है—शिव, सत्य या सुंदर? न हम स्वास्थ्य की परिभाषा दे

सकते हैं, न प्रसन्नता की। किंतु हम जब उनका अनुभव करते हैं तब उन्हें जानते भी हैं। मैं जीना चाहती हूँ; भावी मृत्यु की साँसें मुझमें प्रवेश न कर पायें श्रद्धा से इतनी सावधानी मैं माँगती हूँ।

पराजय प्रवेश-द्वार है उन वीरतासे भरी मानसिक हलचलों का जिनसे महज़ घिसे-पिटे दिनों में रंगीनी आ जाती है, खून में गीत गूंजने लगते हैं और यहाँ तक कि उबा देनेवाले रूढ कर्त्तव्यों में भी एक सौंदर्य की संभावना उत्पन्न हो जाती है। वाल्ट-विटमैन के गीत का भी यही अर्थ है कि यद्यपि विजय महान है परन्तु यदि आवश्यकता हो तो पराजय महानतर है।

किन्हीं विशेष पदार्थों को ध्यान से देखने से दृष्टि का विकास होता है। मनुष्य की भौतिक आँखों को पृथ्वी चपटी दिखायी पड़ती है और तारे जैसे हमारे पूर्वजों को दिखायी देते थे वैसे ही दिखायी देते हैं। किंतु प्रकृति के इन करिश्मों के सम्बंध में विज्ञान ने अनन्त नये रहस्योद्घाटन किये हैं। शिशु अपने आसपास की चीज़ों में से उन्हीं की ओर देखता है जिनकी उसे चाह होती है अथवा नहीं होती, किंतु पेड़ से गिरती हुई नासपाती को देखकर कोई न्यूटन ही उसमें प्रकृति के गुरुत्वाकर्षण को समझ पाता है; उसे सामान्य दृष्टि से कहीं आगे की वस्तु दिखायी देती है। हमारी आत्मा का भी यही हाल है। हमारे दैनंदिन सम्बंधों में जब हमें नये जीवन के विकास की संभावना दिखायी पड़ने लगती है, तभी हमारा भी विकास होता है। किंतु जब हम इस महान सत्य को भुला देते हैं या उसकी उपेक्षा करते हैं तब हमारी इन्द्रियाँ भी हमें पथभ्रष्ट कर देती हैं। अतएव हमारे जीवन-क्रम में आंतरिक विकास के हेतु कुछ सीमाओं की आवश्यकता है, जिससे हमें ईश्वर-प्रदत्त अवसरों का ज्ञान हो जाये।

हमारे जन्म से कल्प-कल्प पूर्व आत्मा के वर्तमान चेतना में जाग्रत होने से पहले, हम कहाँ थे? कल्प-कल्पांतों के बाद जो हमारी मृत्यु के उपरांत आयेंगे, जब हमारी आत्मा अपने वर्तमान प्रबुद्ध रूप से गिर कर फिर प्रसुप्त हो जायेगी – हम कहाँ रहेंगे? निरर्थक प्रश्न; निरर्थक भटकना। किंतु आत्मा यदि अनादि और अनंत है तो फिर कोई कारण नहीं है कि हम आत्मा के भविष्य अथवा भूत से भयभीत हों। बल्कि अच्छा तो यह होगा कि हम अपने इस वर्तमान जीवन को सिर्फ एक 'दो अनंत कालों के बीच की एक दमक' ही समझें और यह विश्वास रखें कि अधिकांश सत्य, अधिकांश सौंदर्य, तथा अधिकांश सार्थकता और भव्यता इन्ही अनन्त कालों में है न कि अभी के इस वर्तमान में।

मैं यह जानती हूँ कि ऐसे भी लोग हैं जो आध्यात्मिक विचारों से ऊब जाते हैं। वे ऊब इसलिए जाते हैं कि उन्हें स्वयं अपनी शक्ति का बोध नहीं होता जिसके फलस्वरूप वे उन अनेक स्वर्णिम और महान संभावनाओं को खो देते हैं जिनकी प्राप्ति उन्हें हो सकती थी यदि वे आंतरिक विचार करते। ऊबा हुआ व्यक्ति वह है जो स्वयं अपने से और भगवान से अपरिचित है। जो भी लोग भगवान से प्रेम करते हैं और उसे जानते हैं उन्हें वह कभी ऊबाने वाला तत्व नहीं लग सकता।

आँखवाले अक्सर इस तरह सोचते हैं कि अंधों की, विशेषतः बहरे-अंधों की दुनिया, उनके सूर्य-प्रकाश से चमचमाते और हँसते-खेलते संसार से बिलकुल अलग है; उनकी भावनाएँ और संवेदनाएँ भी बिलकुल अलग हैं और उनकी चेतना पर उनकी इस अशक्ति और अभाव का मूलभूत प्रभाव है। इतना ही नहीं, वे इससे बड़ी भूलभरी कल्पना करते हैं कि एक बहरा-अंधा, रूप, रंग, और संगीत के सौंदर्य से बेख़बर है। ये बात बारबार उन्हें याद दिलानी पड़ती है कि सौंदर्य, आकार, अनुपात और क्रम के सारतत्व, अंधों को सुलभ और हस्तगत हैं; सौंदर्य और छंद इन्द्रियजन्य नहीं, बल्कि उससे गहरे किसी आध्यात्मिक विधि के परिणाम हैं। फिर भी देख सकनेवाले लोगों में कितने ऐसे हैं जो इस सत्य को सत्य की तरह ग्रहण करते हैं। उनमें कितने ऐसे हैं जो अपने तईं इस तथ्य को समझकर उसकी गाँठ बाँध सकते हैं कि बहरे-अंधों का मस्तिष्क उन्हें उसी देखने-सुननेवाली कौम से उत्तराधिकार में मिला है जो पंचेन्द्रियों की प्राप्ति के लिए योग्य है और आत्मा शब्दहीन अंधकार को अपने प्रकाश और संगीत से भर देती है।

श्रद्धा से मेरी याचना शक्ति की है; सुख और सुविधा की नहीं। जीवित श्रद्धा निःसीम रूप से असुविधाजनक होती है, वह जीवन और उसकी बुराइयों से पलायन या त्राण नहीं देती। अलबत्ता समस्त बाधाओं और संघर्षों के बीच एक अधिक भरी-पूरी जिन्दगी प्रस्तुत करती है। श्रद्धा अपने सही रूप में कर्मठ है, निष्क्रिय नहीं। निष्क्रिय विश्वास अधिक से अधिक वैसी शक्ति है जैसी उस आँख की दृष्टि जो देखती नहीं, या कुछ खोजती नहीं। सक्रिय विश्वास की डर से पहचान नहीं होती। ईश्वर ने जीवन के प्रति अन्याय किया है और संसार को अंधकार के सुपुर्द कर दिया है, ऐसे उद्घोषों का वह विरोध करता है। वह इन्कार करता है इस कथन से कि ऐसा समाज।जिसमें घृणा के स्थान पर स्नेह, और जबर्दस्ती के स्थान पर सहयोग रूढ़ हो जायेंगे, असम्भव है। निराशा के लिए उसके पास स्थान नहीं है। हार उसके लिए केवल आगे बढ़ने का इशारा है।

विश्वास का कवच पहन कर कमज़ोर से कमज़ोर व्यक्ति साकार आपत्तियों से अधिक शक्तिशाली हो जाता है। उसके भीतर का भगवान उसे अखिल विश्व के विरोध में भी तन कर खड़े होने का साहस देता है। किसी भी संयोग के सामने उसकी आत्मा सम्पूर्ण, अभिन्न और प्रसन्न रहती है।

कई बार मैं मनाती हूँ कि ये बहुत ज्यादा ठोस मर्यादाएँ पिघल जायँ। लगता है, उनकी रगड़ से मैं छिली जा रही हूँ। रात-दिन प्रशंसाओं के पहाड़ों पर से पत्रों की मोटी-मोटी धाराएँ मुझ पर गिरती हैं और जताती यह हैं कि मैं देख नहीं सकती, सुन नहीं सकती; जबकि मैं जानती हूँ कि शाश्वत अर्थ में मैं देखती-सुनती हूँ! आत्मा, सिंधु की तरह अपने भीतर पड़े हुए किसी इन्द्रिय अनुभव के द्वीप या महाद्वीप से बड़ा है। उसके विचार-क्षितिज की सीमा नहीं है, उसके विचारों के अनुरूप जीने के तरीके और तथ्य नित नये होकर उस पर उगते रहते हैं। मेरी यह दृढ़मूल भावना कि मैं अंधी या बहरी नहीं हूँ, मेरी उस भावना के समान है जो मुझे असंदिग्ध रखती है कि मैं शरीर में हूँ, किन्तु शरीर की नहीं हूँ। निस्सन्देह मैं यह जानती हूँ कि बाह्यरूप से मैं अंधी-बहरी हेलेन केलर हूँ। यह एक क्षणभंगुर अहंता है; और थोड़े से अंधे-गूंगे वर्ष जिनमें मैं यहाँ हूँ, कोई बड़ी बात नहीं है। मैं अपनी मर्यादाओं का उपयोग औजारों की तरह करती हूँ। अपने आत्म-रूप की तरह नहीं।

यदि दूसरों को उनका उपयोग मिलता है, उनसे कुछ सुख पहुँचता है, तो मुझे इससे मोक्ष का-सा आनन्द मिलता है। तकलीफ होती है अंधेपन और बहरेपन की इस सदा वर्तमान समस्या से जो मुझे वस्तुओं की स्वरधारा और पुस्तकों के वातायन से झाँक कर विश्व को और अधिक देखने-समझने से रोकती है।

स्वस्थ या नीरोग, दृष्टिवान या दृष्टि-हीन, आजाद या गुलाम हम सब यहाँ किसी उद्देश्य से हैं और हमारी परिस्थितियों के बावजूद प्रभु अनन्त प्रार्थना या वैराग्य की अपेक्षा, हमसे हमारे उपयोगी कर्मों के कारण अधिक प्रसन्न होता है। काबा, कलीसा या मंदिर तब तक सूने हैं जब तक उनमें जीवन का शिव आप्लावित नहीं है। पत्थर की दीवारों से वे बड़े-छोटे नहीं होते; उनका परिमाण उनके आसपास के वीर आत्माओं के प्रकाश-घेरे से जाना जाता है। वेदिका तब पवित्र है जब वह हमारे हृदय की उस वेदिका का प्रतिनिधित्व करे जिस पर हमने देवता को प्रिय केवल स्नेह और श्रद्धा चढ़ाये हों—स्नेह जो घृणा से शक्तिशाली है और श्रद्धा जो अविश्वास पर विजय पाती है।

अनेक बार यह कहा जाता है, और यह ठीक भी है कि जीवन का अंतिम ध्येय उपयोगिता है। किन्तु आनन्द से उपयोगिता उत्पन्न होती है और उसे उससे प्रोत्साहन मिलता है। भले ही आपमें विचार करने की शक्तियाँ हैं और आप दिन-रात इस विचार में मशगूल रहते हैं कि संसार की भलाई किस प्रकार सम्भव होगी, परन्तु यदि आपको आनन्दानुभूति नहीं है तो फिर इस सबसे अधिक लाभ नहीं होगा।

आज के ऐसे दिनों में इस बात पर विश्वास करना कि अच्छाई जीवन का एक प्रधान सिद्धान्त है, उतना ही कठिन है जितना अग्निप्रवेश; किन्तु इस विश्वास को त्याग देना इससे भी कठिन होगा। मैं यह खूब समझती हूँ कि वर्तमान मनीषियों के अत्यधिक भय ने भी इतने विनाश की आशंका नहीं की थी जितने की सम्भावना उपस्थित है। अतएव अंधे कर देनेवाले दुःख और बहरे कर देनेवाले भय के बीच अब विश्वास की आवश्यकता और भी अधिक है जिससे कि हमारी भयंकर पीड़ा और भय का उपचार किया जा सके। स्वर्ग और पृथ्वी इतना तो निश्चित-सा हो चुका है कि मनुष्य की निराशा से उत्पन्न मृगमरीचिका है। यदि निराशा का परिणाम एक ऐसे चमत्कार को जन्म देता है तो वह एक अनूठी घटना ही होगी। किन्तु ऐसे सभी लोग जिनका ईश्वर पर विश्वास है, अपने ही संसार को सच्चा मानते हैं। वे इस बात की चिन्ता नहीं करते कि दूसरों को कैसा लगता है और आनन्द का भी जिसका सच्चा अर्थ आत्मा का स्वतंत्र श्वासोच्छ्वास है, इस मृगमरीचिका में खासा हिस्सा है।

छोटे पशुओं के महज़ जीवित रहने के आनन्द, खेलते हुए बच्चों, प्यार के लिए अपने सब-कुछ की बाजी लगा देनेवाले युवक और अत्यधिक परिश्रम से प्राप्त सफलता—इन सबसे, विश्वास को वह सामग्री प्राप्त होती है जिसके द्वारा वह अपने उस मन्दिर का निर्माण करता है जो झंझावात और तूफानों में आश्रय देता है।

मुझे आश्चर्य होता है कि विदा चाहे वह थोड़े समय के लिए ही क्यों न हो, उदासी क्यों देती है। मेरी समझ में यह भावना कुछ वैसी ही होती है जैसी कि प्यार के प्रथम स्वप्न के धूमिल होने पर उत्पन्न खेद, माँ के लिए अपने बच्चे के द्वारा उठाये गये पहले कदम अथवा शब्दों के उच्चारण के प्रथम आनन्द का स्मरण। ऐसा कोई शायद ही सुख हो जिसके अंत में पीड़ा का स्पर्श न हो, किंतु यही वह कीमिया है जो उसकी मिठास को कायम रखती है।

आज का दिन सूर्य के प्रकाश से दैदीप्यमान है। फिर कहीं से अप्रत्याशित ही कुहरे का एक घूँघट और फिर दूसरा; यहाँ तक कि सूर्य का चेहरा छुप जाता है और आँखों के सामने अंधकार छा जाता है किन्तु हमें कभी एक क्षण के लिए सूर्य के वर्तमान रहने में संदेश नहीं होता। किसी कवि ने कहा है कि, जीवन ही हमारे और सूर्य के बीच में कुहासे की एक चादर है। मैं सोचती हूँ यह सच है; मैं सोचती हूँ कि हम – हमारा आत्मतत्व – हमारे सत्य और आनंद का सूर्य तो अमर है, और हमारा वह जीवन जो दौड़धूप से, शोर-गुल से, और भौतिकता से भरा है हमारे और हमारे सूर्य के बीच एक बादल की तरह, कुहरा बन कर छा जाता है।

"कल!" इस शब्द में कितनी संभावनाएँ भरी पड़ी हैं।

भले ही आज का दिन कितना निरुत्साही, निराशा के मेघों से घिरा हुआ भय, बीमारी तथा मृत्यु की आशंका लिए है, किन्तु सौभाग्य की संभावना का 'कल' तो सदैव रहेगा। इसलिए अच्छा हो, हम मृत्यु को सिर्फ आने वाले एक 'कल' की तरह समझें, जो असीम विश्वास और उत्साह से भरा है।

यद्यपि आज बाहरी तौर पर मेरे प्रति कुछ भी घटित नहीं हुआ है, किन्तु मेरे लिए कोई भी दिन घटनाविहीन नहीं होता। मुझमें जो अहं है वह प्रतिदिन सब तरफ देखता है, सोचता-विचारता है और परीक्षा करता रहता है। यद्यपि खिड़की के बाहर क्या हो रहा है, मैं देख नहीं पाती, किसी की आवाज़ भी मुझे सुनायी नहीं देती मगर फिर भी अनुभवों की कितनी असीम सम्पत्ति मेरी पहुँच में है। हाथों की हरेक हरकत, पैरों की हर पद-चाप और खुशी की हर लहर का लेखा-जोखा और अंदाज़ मेरा मन कर लेता है। लोगों में मुझे जो कुछ दिखायी पड़ता है उसे जब मैं अधिक से अधिक स्पष्ट बना कर कह पाती हूँ तभी मुझे सन्तोष होता है।

किसी समय दुःख ईश्वर द्वारा दिया हुआ दंड माना जाता था जिसे निष्क्रिय रह कर श्रद्धा से ढोते रहना ही एकमात्र गति थी। आपत्ति के मारे हुओं की सहायता का विचार सीमित था, उन्हें आश्रय देकर भगवान के ध्यान की सुविधा-भर कर देने में; ताकि वे यथासंभव "अंधेरी घाटियों में" संतोष से दिन काट सकें। किन्तु अब हम ऐसा समझते हैं कि महत्वाकांक्षाओं से रहित एकाकी जीवन आत्मा को अशक्त बना देता है। जो बात शरीर के बारे में सही है, वही यहाँ भी सही है। स्नायु यदि काम में न लाये जायें तो वे अपनी शक्ति खो देते हैं। यदि हम किसी कारण अपनी मर्यादित अनुभव-परिधि न लाँघें, अपनी स्मृति, समझ और सहानुभूति का उपयोग न करें तो वे सब निष्क्रिय हो जाती हैं। संसार की सीमाओं, लोभों और पराजयों से लड़कर ही हम अपनी चरम संभावनाओं को पा सकते हैं।

परिवर्तन जीवन के प्रासाद में ताज़गी देनेवाले किसी झोंके की तरह आकर निकल जानेवाली चीज़ हो सकता है; किन्तु वह उसमें निवास करनेवाली कोई शक्ति नहीं है। हमारी आत्मा में शान्ति और प्राणों को गति देने के लिए हमें पृथ्वी का सौंदर्य, प्रेमियों की मुस्कानें, तरुणों में जीने का उल्लास, रचना-कौशल में गर्व, बोने और काटने का उत्साह जैसी अधिक स्थिर चीज़ों की जरूरत है। समझ में नहीं आता, क्षार कर देनेवाली महत्वाकांक्षा, गति के पागलपन और वस्तु-बाहुल्य के इस युग में हम इन अक्षय निधियों को क्यों भूल बैठे हैं। यदि हम थोड़े में संतोष पाना न सीखें, तो धन की कोई भी विपुलता हमें संतुष्ट न कर सकेगी। अबाधित निर्माण तो केवल सीधे-सादे प्रारम्भों से ही सम्भव होता है।

हमने जो आनंद एक बार पा लिया है, फिर उसे नहीं खो सकते। हम कभी सूर्यास्त देखते हैं, चांदी में स्नात पर्वत-शिखर देखते हैं, सिंधु देखते हैं, कभी शांत और कभी तूफ़ान से भरा हुआ। हम इनके सौंदर्य को प्यार करते हैं और उस दृश्य को अपने मन में उतार लेते हैं। हम जिसे भी घनिष्ठ भाव से चाहते हैं वह हमारा अंश हो जाता है; हमारे स्नेही जनों के निधन के बाद हमें ऐसा लगता है मानों वे हमारे साथ-साथ खेल रहे हैं, हँस रहे हैं, काम कर रहे हैं। सच तो यह है कि जीवन मृत्यु का स्वामी है; और प्रेम का रंग कभी फीका नहीं पड़ता।

समय सदा अधिकांश अनुभवों के निर्माण-तत्वों को बिखरा कर उन्हें केवल मानसिक भावनाएँ बनाकर छोड़ देता है। कितनी ही महत्वपूर्ण घटनाएँ बिलकुल याद नहीं रहतीं और उनका दुबारा वर्णन करना सम्भव नहीं रहता। केवल भावनाओं की ही दुबारा पकड़ सकने की कठिनाई नहीं है; परिस्थिति विशेष के रुखों को स्पष्ट करना भी। और यह कह सकना कि दूसरों पर उनका क्या असर हुआ था, कठिन हो जाता है। वे मानों घोल में घुली हुई चीजें हैं और यदि अपने स्फटिक रूप से अलग होती हैं तब भी सम्बधित व्यक्तियों को कालान्तर में उनकी प्रतीति विभिन्न होती है। मुझे लगता है कि हमारे जीवनों पर जिन व्यक्तियों का प्रभाव पड़ा है, उनके सूक्ष्म उद्देश्यों का प्रामाणिक विश्लेषण भी असम्भव है, क्योंकि तत्कालीन परिस्थिति की तत्कालीन ताज़गी को अक्षुण्ण रखना और इस तरह रचना की प्रक्रिया को परिपूर्ण बनाना

बहुत कठिन है। वनस्पतिशास्त्रज्ञ फूल का विश्लेषण करने जाकर उसके कोमल दलों को तोड़-मरोड़कर विनष्ट ही करता है; भावनाओं का विश्लेषण भी वैसा ही समझिये।

मैं उतने सहज भाव से और करीब-करीब उसी बढ़ते हुए :भाव से अमरता में विश्वास करती हूँ जिस तरह फलदार वृक्ष बीज में करते हैं। किन्तु यह श्रद्धा नहीं है, श्रद्धा तो यह विश्वास उसी समय है जब वह शक्ति देनेवाले सत्यों के बीच में एकाएक प्रकाशवन्त हो उठता है। एक क्षण के लिए प्रभु का दर्शन, नश्वर प्रेमी का कर-स्पर्श, बच्चे का चुम्बन और दूरबीन के काँच से लाखों मील दूर बसे हुए लोकों का दर्शन क्षणभंगुर भले ही हो, श्रद्धा के फलस्वरूप वह एक उत्कृष्ट स्वप्न की तरह तो गिना ही जायेगा।

अभावों के कड़वे नकारों को जितना मैं जानती हूँ उतना कोई नहीं जानता; जान नहीं सकता। यह कहना कि मैं कभी उदास नहीं होती या विद्रोही वृत्ति नहीं अपनाती, सच नहीं है; लेकिन बहुत पहले मैंने तय कर लिया था कि मैं शिकायत नहीं करूंगी। जिन्हे मर्मान्तक घाव लगे हैं उन्हें चाहिए कि दूसरों के ख्याल से वे अपनी घड़ियाँ हँसते-हँसते काटने की कोशिश करें। निर्भय रहकर अंत तक हँसते-हँसते लड़ते रहना – यही तो धर्म है। कोई कह सकता है कि यह तो कोई बड़ा उच्चादर्श नहीं हुआ, किंतु भाग्य की शरण चले जाने से यह कितना अच्छा है। किंतु इस हद तक भी भाग्य को जीतने के लिए काम, मैत्री का आश्वास और प्रभु के कल्याणकारी रूप में बद्धमूल विश्वास हमारे पास होना चाहिए।

बहुत कम लोग संत या प्रतिभावान होते हैं, किंतु प्रत्येक व्यक्ति हमेशा यह आशा तो रखता ही है कि वह जिस विमल आनन्द को पसन्द करता है वह शुभकामनाओं का केन्द्र है। जिस आकर्षक दृश्य को वे देर तक देखते रहते हैं, जिस संगीत को वे डूब कर सुनते हैं, जिस खूबसूरत या कोमल चीज़ को वे झिझकते हुए आदर-भरे हाथों से छूते हैं, वे मधुर विचारों के पक्षीदलों की तरह डैने तौलकर आकाश में ऊपर उठ जाते हैं—मधुर विचारों का यह दल दुःख या दारिद्र्य के हाथों नष्ट हो सकनेवाली चीज़ नहीं है। आनन्द, उस श्रद्धा और स्नेह का मुक्त कंठ है जो अन्ततः अनन्त जीवन की ओर से साधुवाद देंगे—"भद्रं कृतम्"।

अंधकार में बाधाओं से टकराते हुए जब मैं भटकती हूँ तो आत्मा के देश से जो उत्साह देनेवाली हल्की-हल्की आवाजें आती हैं उनका मुझे एहसास होता रहता है। अनन्त के झरनों से, लगता है जैसे कोई पवित्र भावना प्रपात बनकर गिर रही हो। प्रभु के निःश्वास के छंद में अपने को लय करते हुए संगीत से मैं विभोर हो जाती हूँ। सूर्य और नक्षत्रों से अदृश्य रश्मियों-तारों के द्वारा जुड़ी हुई मैं अपनी आत्मा में अनन्त की शिखा का अनुभव करती हूँ। रोजमर्रा की इस मामूली हवा में मुझे वैकुंठ की वर्षा का भान होता है। प्रकाशहीनता और शब्दहीनता के बीच मुझमें उस ज्योति की चेतनता जाग्रत हो जाती है जो धरती की हर चीज़ को स्वर्ग की हर चीज़ से बांधे हुए है। मुझ अंधी और गूंगी को ऐसा लगने लगता है कि मेरे भीतर वे किरणें पड़ी हुई हैं, जो मुझे मृत्यु के हाथों मुक्ति पा जाने के बाद आज से सहस्र-गुनी दृष्टि प्रदान करेंगी।

इंद्रियानुभव भ्रामक हैं ; इतना ही नहीं, हमारी भाषा के कितने ही प्रयोगों से सूचित होता है कि वे लोग जिन्हें पंचेन्द्रियाँ प्राप्त हैं, उनको उनके विशिष्ट क्षेत्रों में सीमित नहीं रख पाते। संगीत का स्वाद चखा जाता है, दृष्टिकोण सुने जाते हैं और मैंने सुना है कि आवाज़ें रंगीली होती हैं; स्पर्श जिसके बारे में मेरा ख्याल था कि सूक्ष्म दर्शन का एक प्रकार है, स्वाद का अंग समझा जाता है। स्वाद शब्द का हर संदर्भ में इतना अधिक प्रयोग होता है कि जान पड़ता है कि उसका कार्यक्षेत्र अन्य इन्द्रियों से बहुत विस्तृत है, सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। जीवन के छोटे-बड़े अंचलों पर उसी का राज्य है। निःसन्देह इन्द्रियों की भाषा विरोधी अर्थों से भरी हुई है और मेरे वे बन्धु जिनके घर में पाँच-पाँच दरवाजे हैं, अपने घर में उससे अधिक आश्वस्त नहीं हैं, जितनी मैं हूँ।

मेरा विश्वास है कि हम पृथ्वी पर ईसा के उपदेशों के अनुसार रह सकते हैं। मेरा यह भी विश्वास है कि पृथ्वी पर सबसे अधिक आनन्द तभी अवतरित होगा जब मनुष्य उनका यह आदेश, "तुम आपस में स्नेह से रहो" मानेगा।

मेरा विश्वास है कि आदमी और आदमी के बीच की प्रत्येक समस्या धार्मिक है और प्रत्येक सामाजिक अन्याय नैतिक अन्याय है।

मेरा विश्वास है कि हम पृथ्वी पर प्रभु की इच्छा को पूरी करते हुए रह सकते हैं और जब प्रभु की इच्छा जिस प्रकार स्वर्ग में उसी प्रकार पृथ्वी पर पूरी की जायगी तो हर व्यक्ति दूसरों के प्रति प्रेम करेगा और उनके साथ वैसा ही बर्ताव करेगा जैसा वह उनसे अपने प्रति चाहता है। मेरा विश्वास है कि प्रत्येक का हित सबके हित से संबद्ध है।

मेरा विश्वास है कि जीवन हमें इसलिए दिया गया है कि हम प्रेम में विकासवान हों और मेरा विश्वास है कि भगवान मुझमें उसी तरह है जिस तरह फूल की सुगंधि और रंग में सूर्य है—मेरे अंधेरे का प्रकाश है और मेरी मूकता का स्वर है।

मेरा विश्वास है मनुष्य पर अभी तक खंडित झाँकियों में ही सत्य के सूर्य का प्रकाश पड़ा है। मेरा विश्वास है कि अंततः प्रेम पृथ्वी पर प्रभु के राज्य की स्थापना करेगा और उस राज्य के आधार-स्तम्भ होंगे स्वतन्त्रता, सत्य, बन्धुत्व और सेवा।

मेरा विश्वास है कि किसी भी अच्छाई का नाश नहीं होगा और मनुष्य ने जिस शिव का जो सपना देखा है, जिसकी आशा की है, जिसकी कामना की है, वह शाश्वतकाल तक अक्षुण्ण रहेगा।

आत्मा की अमरता में मेरा विश्वास है क्योंकि मुझमें अमरत्व की कामना है। मैं मानती हूँ कि मृत्यु के बाद हम जिस स्थिति को प्राप्त होते हैं वह हमारे उद्देश्यों, विचारों और कर्मों का फल होती है। मेरा विश्वास है कि अगले जन्म में मुझे वे इन्द्रियाँ प्राप्त होगीं जो यहाँ मुझे नहीं मिलीं और वहाँ मेरा घर, रंग, संगीत, फूलों की वाणी और स्नेहियों के चेहरों से भरा होगा।

इस विश्वास के बिना मेरे जीवन में बहुत अर्थ नहीं हो सकता। इसके बिना मैं अंधेरे में अंधकार का एक स्तम्भ मात्र हूँ। जिन्हें शारिरिक इन्द्रियों का पूर्ण सुख प्राप्त है, वे मुझे देख कर मुझ पर दया करते हैं; किन्तु यह इसलिए कि वे मेरे जीवन के उस स्वर्ण-कक्ष को नहीं देख पाते जहाँ मैं प्रसन्न हूँ। मेरा पथ उन्हें अंधेरा भले दिखता हो, किन्तु मैं अपने भीतर एक रहस्यमय प्रकाश लेकर चल रही हूँ। विश्वास, आत्मा का शक्तिशाली प्रकाश-पुंज, मेरा पथ उज्ज्वल बनाता है, और

यद्यपि जहाँ-जहाँ अशुभ, सन्देह दबे-छुपे हैं, मैं उस मोहक कांतार की ओर निर्भय होकर बढ़ रही हूँ जहाँ की बनराशि सदा हरी-भरी है, जहाँ आनंद का निवास है, जहाँ पंछी रहते और चहकते हैं और जहाँ जीवन और मरण प्रभु-चरणों में एक होकर पड़े हैं।

पर्ल पुस्तकमाला

* *

योगी और अधिकारी — आर्थर कोएस्लर। सुप्रसिद्ध साहित्यक-विचारक द्वारा लिखित आज के गम्भीर प्रश्नों पर गवेषणापूर्ण निबंध। मूल्य : ५० नये पैसे।

थामस पेन के राजनैतिक निबंध — मानव के अधिकारों और शासन के मूलभूत सिद्धांतों से सम्बधित एक महान कृति। मूल्य : ५० नये पैसे।

नववधू का ग्राम-प्रवेश — स्टिफन क्रेन। महान अमरिकी लेखक स्टिफन क्रेन की नौ सर्वश्रेष्ठ कहानियों का संग्रह। मूल्य : ७५ नये पैसे।

भारत – मेरा घर — सिंथिया बोल्स। भारत में भूतपूर्व अमरीकी राजदूत चेस्टर बोल्स की सुपुत्री के भारत-सम्बंधी संस्मरण। मूल्य : ७५ नये पैसे।

स्वातंत्र्य-सेतु — जेम्स ए. मिचनर। हंगेरी के स्वातंत्र्य-संग्राम का अति सजीव चित्रण इस पुस्तक में किया गया है। मूल्य : ७५ नये पैसे।

शस्त्र-विदाई — अर्नेस्ट हेमिंग्वे। युद्ध और घृणा से अभिभूत विश्व की पृष्ठभूमि में लिखित एक विश्व-विख्यात उपन्यास। मूल्य : १ रुपया।

डा. आइन्स्टीन और ब्रह्माण्ड — लिंकन बारनेट। आइन्स्टीन के सिद्धान्तों को इसमें सरल रूप से समझाया गया है। मूल्य : ७५ नये पैसे।

अमरीकी शासन-प्रणाली — अर्नेस्ट एस. ग्रिफिथ। अमरीकी शासन-प्रणाली को समझने में यह पुस्तक विशेष लाभदायक है। मूल्य : ५० नये पैसे।

अध्यक्ष कौन हो ? — केमेरोन हावले। एक सुप्रसिद्ध, सशक्त और कौशलपूर्ण उपन्यास, जो कुल चौबीस घंटे की कहानी है। मूल्य : १ रुपया।

अनमोल मोती — जॉन स्टेनबेक। स्टेनबेक ने इसमें एक सरल-हृदय मछुए की बड़ी मार्मिक कथा प्रस्तुत की है। मूल्य : ७५ नये पैसे।

अमेरिका में प्रजातंत्र — अलेक्सिस डि.टोकवील। प्रायः एक सौ वर्ष पूर्व प्रख्यात फ्रांसीस राजनीतिज्ञ द्वारा लिखित एक अमर कृति। मूल्य : ७५ नये पैसे।

फिलिपाइन में कृषिसुधार — एल्विन एच. स्काफ। फिलिपाइन में हुए हुक-विद्रोह और वहाँ की सरकार द्वारा शांति के लिए किये गये प्रयासों का अति रोचक वर्णन. मूल्य : ५० नये पैसे।

मनुष्य का भाग्य—लकॉम्ते द नॉय । एक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक द्वारा जीव और जगत के मूलभूत प्रश्नों का वैज्ञानिक विश्लेषण । मूल्य : ७५ नये पैसे ।

शांति के नूतन क्षितिज—चेस्टर बोल्स । आज की विश्व-समस्याओं पर एक सुस्पष्ट एवं विचारपूर्ण विवेचन । मूल्य : १ रुपया ।

जीवट के शिखर—अर्नेस्ट के. गैन । यह उपन्यास सन् १९५४ का सबसे अधिक बिकनेवाला उपन्यास माना जाता है । मूल्य : १ रुपया ।

१९५९ के नये प्रकाशन

डनबार की घाटी—बोर्डेन डील । अपनी पैतृक सम्पत्ति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए एक किसान के संघर्ष की कहानी । मूल्य : १ रुपया ।

रूस की पुनर्यात्रा—लुई फिशर । स्तालिन की मृत्यु के बाद प्रख्यात पत्रकार फिशर की रूस यात्रा का अति रोचक वर्णन । मूल्य : ७५ नये पैसे ।

रोम से उत्तर में—हेलेन मेक् ईन्स । रहस्य, रोमांच और खतरों से परिपूर्ण यह उत्कृष्ट उपन्यास सभी को रोचक लगेगा । मूल्य : १ रुपया ।

हमारा परमाणुकेन्द्रिक भविष्य—एडवर्ड टैलर और अल्बर्ट लैटर । परमाणुशक्ति के तथ्य, खतरों तथा सम्भावनाओं की चर्चा प्रस्तुत पुस्तक में अमरीका के दो विशेषज्ञों द्वारा की गयी है । मूल्य : १ रुपया ।

नवयुग का प्रभात—थामस ए. डूली, एम. डी. । एक नवजवान डाक्टर की दिलचस्प कहानी जो भयंकर रोगों से ग्रसित जनता की सेवा के लिए सुदूर लाओस में जाता है । मूल्य : ७५ नये पैसे ।

रूजवेल्ट का युग (१९३२–४५)—डेक्स्टर पर्किन्स । मूल रूप में शिकागो युनिवर्सिटी द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक रूजवेल्ट के समय का अच्छा अध्ययन है । मूल्य : ५० नये पैसे ।

अब्राहम लिंकन—लार्ड चार्नवुड । यह मात्र लिंकन की जीवनी न हो कर अमरीकी राजनीतिक इतिहास का एक क्रान्तिकारी अध्याय है । मूल्य १ रु. ।